UNIVERSAL
LIBRARY
OU_178854
UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—901—26-3-70—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H.83 Accession No. GH.3151

Sh52A

Author शर्मा 'विमल'

Title अफ्रीका के आंचल में 1963

This book should be returned on or before the date last marked below.

अफ्रीका के आञ्चल में

(बाल–उपन्यास)

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से भेंट

शम्भु "विकल" एम० ए०

हमारे यहां से प्रकाशित
लेखक की अन्य रचनायें
इसी माला में

गर्मी की छुट्टियों में

वीरता, साहस और खेल-२ में देश निर्माण का महान कार्य करने की प्रेरणा प्रदान कराने वाला बालकों के लिए लिखा गया एक शिक्षाप्रद उपन्यास। प्रत्येक स्कूल के बच्चों के लिए एक आवश्यक पुस्तक, जो अपने ढंग की हिन्दी भाषा में पहली पुस्तक है।

विश्व-विजेता सिकन्दर

सिकन्दर महान के जीवन की प्रसिद्ध घटनाओं को लेकर आधुनिकतम खोज के आधार पर लेकर लिखा गया अपने ढंग का पहला हिन्दी उपन्यास। इतिहास सम्बंधी जानकारी एवं उस समय के प्रसिद्ध देशों और राज्यों का सविस्तार सचित्र वर्णन।

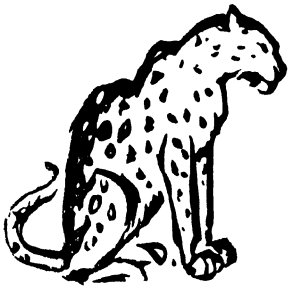

(बाल-उपन्यास)

अफ्रीका के आंचल में

संध्या प्रकाशन
१२४१, माली वाड़ा
दिल्ली-६

प्रकाशक :

संध्या प्रकाशन
१२४१, मालीवाड़ा,
दिल्ली–६ ।

कापी राइट––१९६३:––शम्भू 'विकल' एम० ए०

प्रथम संस्करण
मई–१९६३

मूल्य
२.५० न० पैं०

मुद्रक :
अजन्ता प्रेस
रोड १३, नई मण्डी
मुजफ्फरनगर ।

अकसर सुना जाता है और वास्तव में यह सच भी है कि हमारे देश में बाल-साहित्य का प्रकाशन उचित स्तर पर नहीं है। बालकों की कोमल और अपरिपक्व बुद्धि के लिये सरल और स्वस्थ्य मनोरंजन के साथ-साथ उनके ज्ञान के विकास के हेतु ही इस माला का प्रकाशन उपस्थित है। इस माला की पुस्तकों में सबसे बड़ा ध्यान इस बात पर दिया गया है कि बालक अपने स्कूल से अतिरिक्त समय में पुस्तक पढ़ने का शौक उत्पन्न कर सकें। एक पुस्तक पढ़ने के बाद ही उनमें और अधिक पुस्तक पढ़ने का चाव सहज ही पैदा हो जाये।

अफ्रीका के आंचल में पूर्वी अफ्रीका के भौगोलिक सांस्कृतिक जीवन पर आधारित हिन्दी भाषा में अपने ढंग का पहला बाल-उपन्यास है। तीस से अधिक चित्रों के साथ इस उपन्यास से मनोरंजन के साथ ही बालकों को भौगोलिक ज्ञान एवं सांस्कृतिक जीवन की झांकी मिलेगी। हमारा विश्वास है कि इस उपन्यास के प्रकाशन से हमारे देश के नौनिहालों को एक नई दिशा मिलेगी।

बरगद का पेड़

शाम हो गयी थी। सूर्य धीरे-धीरे अपने प्रकाश को समेट कर अस्त हो रहा था। स्कूल से बच्चे घर लौट रहे थे। इस समय इन बच्चों की चाल में काफी तेज़ी थी। दिन भर किताब और गम्भीर बने शिक्षकों की ओर देखते देखते उनका कोमल मन मुरझा गया था और अब इस समय वह नदी किनारे बने बाल-भवन जाना चाहते थे। वे घर जाते, मेज पर बस्ता पटक मां से खाने को मांगते। मां उनकी जल्दबाज़ी की आदत को जानती थी इसलिये घर आते ही उन्हें खाना मिल जाता था। वे जल्दी, जल्दी खाना खाते और अपना सफेद कपड़े का जूता पहन एक दम उछलते, कूदते बाल–भवन जा पहुँचते थे। वहाँ वे खेलते लड़ते, झगड़ते और इतना हंसते कि उनके पेट में दर्द होने लगता था। काफी थककर घर लौटने पर जब वे बिस्तर पर लेटते तो बिल्कुल बेहोश हो सो जाते थे।

प्रमोद, राकेश, और राजेन्द्र तीन पड़ौसी, एक सी

तबीयत वाले पक्के दोस्त भी रोज़ स्कूल से आने के बाद बाल भवन जाते थे। यह लोग थोड़ी देर तो कोई खेल खेलते पर अधिकतर बाल-भवन के नीचे बने तालाब में जाकर तैरा करते थे। तैरते तैरते जब वे थक जाते थे तो वापिस आकर एक पुराने बरगद के पेड के नीचे बैठ जाते थे। यह बरगद का पेड़ बहुत पुराना था और उसकी शाखायें काफी दूर तक फैली थीं। इन्ही शाखाओं को ईंटों आदि से जोड़कर कभी किसी साधु बाबा ने अपने रहने के लिये एक कोठरी बनाई थी। यह कोठरी इस समय बिल्कुल खाली थी। इन तीनों साथियों को इस बरगद के पेड़ के नीचे बनी कोठरी में बैठकर गप्प लड़ाने मे बड़ा मज़ा आता था। तीनों साथियों ने मिलकर इस कोठरी की सफाई और पुताई कर इसमें कुछ चटाई और बोरी लाकर बिछालीं थी। कोठरी के बाहर पेड़ की टहनी और पत्तियों को भी उन लोगों ने इस तरह से बांधकर छा दिया था कि बाहर से किसी को भी कोठरी के होने का संदेह नहीं होता था प्रमोद ने कोठरी के बाहर एक तख्ती पर खड़िया से लिखा था —'दिलेर भवन'

यह कोठरी इन तीन दिलेर साथियों का कल्पना

भवन था। यहाँ बैठकर रोज़ यह तीनों साथी आपस में बड़ी बड़ी लम्बी चौड़ी जीवन की रूप रेखा बनाते और बिगाड़ते थे। स्कूल मे पढ़ी हुई किताबों में सिकन्दर, कोलम्बस आदि की साहसी यात्रायें, युद्ध और भ्रमण की बातें इन लोगों को काफी प्रिय लगी थीं और उसी पर आकर्षित हो यह अपने को दिलेर कहते थे। वह अपने मे हिम्मत, बहादुरी और उत्साह का पूरा बल लाने की कोशिश करते थे और संसार में महान बनने का स्वप्न देखा करते थे।

इन तीनों साथियों ने अपनी गुप्त बैठक में कभी चौथे को आने का निमन्त्रण न दिया था। इन तीनों साथियों ने कुछ गुप्त शब्द अपने बना रक्खे थे और इस तालाब के किनारे पहुँच कर अपने साथियों को बुलाने के लिए यही गुप्त शब्द कहते थे। इससे उन्हें यह फायदा होता था कि कभी कोई इन तीनों के दिलेर भवन का राज़ न जान पाया था और इन लोगों की योजना को कभी कोई बाधा न पहुँचती थी।

इस संध्या को भी रोज़ की तरह यह तीनों साथी अपने दिलेर भवन मे अपनी कल्पना गोष्ठी में लीन थे। प्रमोद, राकेश और राजेन्द्र से कह रहा था—भाई किसी प्रकार भी हमें इन गर्मी की छुट्टियों

में बाहर घूमने के लिए चलना चाहिये, कोई ऐसी तरकीब निकालनी चाहिये कि हम लोग कहीं बाहर सैर को जायें पर माता-पिता को कैसे राजी किया जाये ।

राकेश ने प्रमोद की बात पर कहा—हाँ यार इस वर्ष तो कहीं बाहर चलना ही चाहिये । हम लोग भी अब करीब चौदह साल के होगये हैं अगर इस समय भी हम लोग किसी दूसरे शहर में नहीं गये तो हमे अपने को दिलेर कहना व्यर्थ है । राजेन्द्र ने बात को आगे बढ़ाते हुये कहा—कल ही तो हमने इंगलैंड मे स्काउट बालकों की कहानी पढ़ी है । अकेले ही वे मीलों जंगलों में कई दिनों तक सैर करते रहे । धन्य है वह देश और वहाँ के माता-पिता । प्रमोद ने कहा-ठीक है, यह तो सही है कि हमारे माता-पिता हमें कहीं भी आज्ञा देकर बाहर नही जाने देंगे । वे लोग तो हमें बिल्कुल गुड्डे जैसा समझते हैं । आखिर हम लोग मुसीबत नहीं सहेंगे तो संसार को कैसे विजय करेंगे ।

प्रमोद जैसे ही इस वाक्य को समाप्त कर पाया उसने सुना कि कोई दरवाजे को खटखटा रहा है । तीनों साथी अचरज से एक दूसरे का मुंह ताकने लगे

पर किसी ने भी उठकर दरवाजा नहीं खोला।

काफी देर तक दरवाजे पर टक टक की आवाज होती रही। बाहर से कोई कह रहा था—भीतर कौन है ? दरवाज़ा खोलो।

प्रमोद ने अपने साथियों से चुप चाप कहा—मालूम पड़ता है हमारा भेद किसी को मालूम हो गया है। दरवाजा तो खोलना ही पड़ेगा पर हम लोग अपने-अपने डंडे ले लें शायद कोई शत्रु हो।

दरवाजा अब भी खटखटाया जा रहा था। प्रमोद ने दरवाजे पर आकर ज़रा तेज़ आवाज़ में कहा कौन है ? कौन है ? बाहर से आवाज़ आई—एक घण्टे से दरवाजा पीट रहा हूँ और तुम लोग खोल ही नहीं रहे हो। एक तो मेरे घर पर कब्जा कर लिया है और दूसरे दरवाज़ा खुलवाने पर पूछते हो कौन है ?

प्रमोद ने अपने साथियों की ओर देखा और फिर इशारे में ही एक मत हो दरवाजा खोल दिया।

दरवाज़ा खोलते ही उन्होंने अपने सामने एक लम्बी दाढ़ी और जोगिया कपड़े पहने हुए साधु को देखा। साधु की आँखें बड़ी-बड़ी और शरीर गठा हुआ था। वह एक बिस्तर और एक थैला

बगल में दबाये हुये था।

राजेन्द्र और राकेश ने साधु को देखते ही झट से उन्हें प्रणाम कर उनका चरण छुआ। प्रमोद ने भी इन लोगों की देखा-देखी उनके चरण छुए।

साधु तेज़ निगाहों से इन लड़कों को देखकर बोला—तुम लोग यहाँ क्या कर रहे थे? मेरी कोठरी पर क्यों आये?

प्रमोद बड़ी हिम्मत कर बोला—महाराज यह तो हमारा दिलेर भवन है। हम लोगों ने दो वर्ष पहले इसे इसी तरह खुला पाया था।

साधु दिलेर भवन का नाम सुन कर बोला—दिलेर भवन-यह क्या है? इस मेरी छोटी सी कोठरी को तुम लोगों ने दिलेर भवन, कैसे बना लिया? चलो तो अन्दर, देखें।

तीनों लड़के साधु के साथ कोठरी मे गए, साधु ने चारों ओर तेज़ निगाह से देखा—अन्दर सफाई और दरी बिछी देखकर उसका क्रोध शान्त हुआ और वह अपने बिस्तर तथा थैले को एक ओर पटक कर बोला खैर-तुम लोगों ने मेरी कोठरी को बरबाद नहीं किया। मुझे तो भय था कि मेरे अफ्रीका चले जाने पर

शायद किसी ने मेरे इस स्थान पर कब्जा न जम
लिया हो ।

राजेन्द्र ज़रा तेज़ था । झट से बोला—कब्जा त
जमा लिया है हम तीन दिलेरों ने । यह तो हमार
दिलेर भवन है । हां आप जब तक इसमें रहना चा
इसमें रह सकते हैं ।

साधु राजेन्द्र की ओर बड़ी बड़ी आँखों से देख
लगा पर इस वक्त उसकी आँखों में क्रोध न थ
बल्कि प्यार था । वह अपनी स्वाभाविक तेज़ आवा
में बोला, दिलेर भवन, कैसा दिलेर भवन ? तु
लड़कों का मतलब क्या है ? तुम लोग कौ
हो ? जबाब दो जल्दी से ?

प्रमोद ने कहा—बाबा, हम लोग पास में ही रह
हैं । यहाँ स्कूल में पढते हैं । हम तीनों मित्र हैं, औ
अपने आपको दिलेर समझते हैं । हम लोग संसार
दिलेरी का काम कर यश और नाम कमाना चाह
हैं अतएव हम लोगों ने इस स्थान का नाम दिले
भवन रखा है ।

साधु प्रमोद की बात सुनकर हंस पड़ा, बोला-ठी
है, मुझे तुम लोगों से मिलकर खुशी हुई है । मैं अपन

यह स्थान तुम लोगों को देता हूँ पर जब तक मैं यहाँ रहना चाहूँगा रहूँगा। पर मेरे रहने से तुम लोगों को कोई अड़चन न होगी। तुम लोग अपनी मीटिंग रोज़ यहाँ कर सकते हो। मैं भी यहाँ हमेशा थोड़े ही रहूँगा ,अभी दो वर्ष बाद मै अफ्रीका से आया हूं और फिर थोड़े दिन रहकर जापान चला जाऊँगा।

राकेश अब तक बिल्कुल चुप था, अफ्रीका की बात सुन उससे न रहा गया। बोला-आप अफ्रोका गये थे ? हमें वहाँ की कहानी सुनाइये।

साधु बोला-- नहीं, नहीं। इस वक्त कुछ नहीं। मैं अपने अनुभव को एक पुस्तक में लिख रहा हूं। छप जाने पर पढ़ लेना।

पर हमारे ये तीन दिलेर कब मानने वाले थे। साधु की बड़ी विनय तथा प्रार्थना की। प्रमोद बोला न बाबा जी हम लाग तो आज ही सुन कर रहेंगे। आपकी अफ्रीका यात्रा, और आपकी जीवनी भी। आपको हमें बताना ही पड़ेगा।

साधु बोला--अच्छा, अच्छा। आज तो मैं काफी थका हुआ हूं। इस वक्त देर भी अधिक हो चुकी है। तुम लोग घर जाओ और कल शाम को आना।

मैं तुम लोगों की बातों और विचारों से काफी खुश हूं। इसी लिये सुना दूंगा—पर जाओ अब तुम लोग घर जाओ।

प्रमोद ने जेब से निकाल कर ताले की चाभी साधु को दी और कहा—बाबा, कुंडी में ताला लटक रहा है, बाहर जाते वक्त ताला दरवाजे में बन्द कर देना और चारों ओर फैली हुई लताओं को ठीक से जमा देना जिससे दरवाज़ा ढक जाये। क्योंकि किसी को पता लग गया तो हमारे इस दिलेर भवन का खात्मा हो जावेगा।

अच्छा, अच्छा—तुम लोग जाओ—कहकर साधु ने उन तीनों बालकों को बाहर दरवाजे तक पहुंचाया।

बाहर आकर तीनों ने बाबा को प्रणाम किया और अपने—अपने घर चले गये। रात को सपने में साधु की बातें और अफ्रीका देश की कहानी का कौतुहल उनके दिमाग पर नाचता रहा।

दूसरे दिन तीनों मित्र उछलते कूदते जल्दी जल्दी दिलेर भवन पहुंचे। साधु बाबा इस वक्त बैठे कुछ लिख रहे थे। तीनों साथियों को आया देखकर बोले—अच्छा तुम लोग आगये, आओ बैठो।

तीनों मित्र एक चटाई पर बैठ गये और गौर से साधु के लिखे हुये कागज को देखने लगे। साधु थोड़ी देर तक लिखता रहा फिर उसने अपना कागज आदि समेट कर एक ओर को रख दिया।

प्रमोद और उसके साथी साधु के मुंह से उनके भ्रमण की कहानी सुनने को बड़े आतुर हो रहे थे। वह बोल उठा, बाबा—आज तो हमें अपनी कहानी सुनाइये, आप किस तरह अफ्रीका गये? वहाँ क्या क्या देखा?

साधु बोला—सुनाता हूं भाई सुनाता हूं। तुम लोग तो बड़े बेचैन मालूम पड़ते हो। अच्छा लो सुनो।

प्रमोद, राजेन्द्र और राकेश तीनों साधु के और नज़दीक खिसक कर बैठ गये।

साधु कहने लगा—देखो मै तुम लोगों को पहिले अपनी जीवनी के बारे में कुछ बतलाता हूं ताकि तुम लोग समझ जाओ कि मै कैसे साधु बना और कैसे दुनिया के कई भागों की सैर कर सका। सुनो—

मैं लखनऊ के पास के एक गाँव में अपने माता-पिता के साथ रहता था। बचपन में मैं गाँव की एक

पाठशाला में पढ़ने के लिये भेज दिया गया। पाठशाला के अध्यापक जिसे हम पंडित जी कहते थे काफी सख्त थे। जरा सी बात पर ही मारने लगते थे। मैं उनसे काफी परेशान था क्योंकि मुझे वह बहुत मारा करते थे। दिन भर वह अपना कोई न कोई काम हम लोगों से करवाते रहते थे और काम न करने पर डंडे की मदद से मारा करते थे। एक दिन की बात है कि पंडित जी ने मुझे अपनी गाय चराने को कहा, मैं गाय चराने पास के एक जंगल में गया। गाय चरती रही और मैं एक पेड़ के नीचे बैठ गया। उस पेड़ पर एक बाबा जी ने अपना डेरा जमाया हुआ था। मैंने उनको प्रणाम किया और उनके समीप बैठ गया।

बाबा जी ने मुझे बड़ा प्यार किया और मुझसे कहा कि बेटा, संसार में पैदा हुये हो तो संसार को देखो। ईश्वर की बनाई हुई दुनिया विचित्र है। इस विचित्रता को देखे बिना मनुष्य जीवन व्यर्थ है।

मैं बाबा की बातों से बहुत प्रभावित हुआ। मैंने कहा बाबा मुझे भी आप साधु बनालो। मैं आपके साथ-साथ देश विदेश का भ्रमण करूंगा।

लेकिन बाबा ने कहा न बेटा न, मुझे गाँव वाले

तुम्हें भगा ले जाने के अपराध में गिरफ्तार करा देंगे। तुम अपने में हिम्मत तथा ताकत पैदा करो और इस संसार को देखो।

मैं बड़ी देर तक साधु बाबा की बात सोचता रहा और फिर एकाएक घर छोड़कर बाहर जाने का फैसला कर लिया। पंडित जी की गाय भी पता नहीं चरते चरते कहाँ चली गई थी। मैं पंडित जी की मार के डर से भी वापस नहीं जाना चाहता था और सीधा स्टेशन की ओर चल पड़ा।

स्टेशन पर पहुँचकर मैं सामने खड़ी हुई एक गाड़ी पर जा बैठा। मेरी जेब में एक भी पैसा नहीं था। पर मैं साधु बाबा की बात गाँठ में बांधे हुये हिम्मत और साहस के साथ चल दिया।

दिन भर मैं ऊपर की एक बेंच पर सोता रहा। शाम के करीब मेरी आंखें खुली। उस समय मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी थी। मैं ऊपर की सीट से नीचे उतरा। इस वक्त गाड़ी कुछ, कुछ खाली थी। नीचे की बेंच पर एक अच्छी पोशाक वाला व्यक्ति बार बार घूर कर मुझे देख रहा था। काफी देर तक देखने के बाद वह मुझ से बोला-भूखे मालूम पड़ते हो ?

खाना खाओगे ? मै कुछ बोलना चाहकर भी न बोल सका। उसने अपनी गठरी खोलकर मुझे खाने को दिया।

मेरे खा पी लेने के बाद उसने मुझसे कहा तुम कौन हो, कहां जाने का इरादा है ? मै उसकी दया से काफी प्रभावित होगया था अतएव सब कुछ सच बतला दिया। उसने मुझसे कहा तुम्हारा इरादा तो नेक है पर अगर तुम दुनिया देखना चाहते हो तो पहिले कोई हुनर सीखलो। दुनिया बिना पैसे के नहीं देखी जा सकती और पैसा पैदा करने के लिये कोई हुनर आना चाहिये। मैं जादू के खेल दिखाना जानता हूं। तुम अगर सीखना चाहो तो मेरे साथ चलो। मै बम्बई जा रहा हूं और वहां तुम मेरे काम मे भी हाथ बटाना और साथ ही साथ खेल भी सीखना।

मुझे उस व्यक्ति की बातें काफी पसन्द आईं। मैंने उसके साथ जाने का निश्चय कर लिया और अगले दिन हम बम्बई पहुंच गए।

बम्बई में मैं करीब तीन साल तक इस जादूगर के साथ रहा। मैं उसके काम में मदद करता और और उससे जादू के खेल सीखता। तीन साल बाद

मैं जादू के खेल में बिल्कुल पण्डित बन गया और फिर स्वयं ही अकेले जादू के खेल दिखाने लगा। मैं इस खेल से तीन सौ रुपया मासिक पैदा करने लगा। अब मैंने संसार भ्रमण करने का निश्चय कर लिया।

मैंने करीब पांच साल तक सारा हिन्दुस्तान भ्रमण किया। जिस शहर में जाता मैं अपने खेल का विज्ञापन करवा देता या लोग मेरे खेल की तारीफ करते और इस तरह मैं भ्रमण भी करता और पैसे भी कमाता था।

साधु इतनी बात कहने के बाद इन तीनों साथियों से बोला-अच्छा, तुम लोग अब घर जाओ बाकी मैं कल बताऊंगा। इस वक्त काफी देर होगई है और तुम्हारे माता-पिता तुम्हारा इन्तजार करते होंगे।

प्रमोद ने कहा—बाबा ! आपकी बातें इतनी दिलचस्प हैं कि हम लोगों को घर जाने की इच्छा ही नहीं होती। खैर, घर तो जाना ही पड़ेगा नहीं तो मार पड़ेगी, लेकिन कल इतवार है। हम लोग सबेरे से ही आपके पास आ जायेंगे और आपसे आपकी कहानी सुनेंगे।

प्रमोद के प्रस्ताव का उसके दोनों साथियों ने अनुमोदन किया। साधु इन बच्चों के उत्साह को भंग नहीं करना चाहता था। बोला-अच्छा भाई, अच्छा कल सबेरे ही हमारी खोपड़ी खाना। जाओ अब तो घर जाओ।

जादू जो सिर चढ़ कर बोले

बरगद के पेड़ के नीचे साधु बाबा ईंटों को जमा कर चूल्हा बना उस पर अपना खाना बना रहे थे। तीनों साथी सबेरे ही वहां जा पहुंचे। इन तीनों को देखते ही साधु बाबा बोले, आ गये दिलेरो ? तुम लोगों को रात भर नींद भी आई या नहीं।

तीनों साथी उत्तर में सिर्फ मुस्करा पड़े। साधु ने फिर कहा-मैं इस वक्त खाना पका रहा हूं। तुम लोग तब तक बैठो। थोड़ी देर बाद मैं तुम्हें अपनी बातें सुनाऊंगा।

तीनों साथी एक ओर जाकर बैठ गये और साधु का खाना बनते देखते रहे। साधु एक हंडिया में शायद खिचड़ी बना रहा था। खिचड़ी खदबद, खदबद पक रही थी। अचानक साधु को क्या सूझा कि उसने इन तीनों साथियों को अपने पास बुलाया और कहा कि देखो मैं तुम्हें एक जादू दिखाता हूं। तीनों साथी इससे बड़े खुश हुये व एक साथ बोल उठे-हां, हां। दिखाओ। हम लोग तो घर से सोचकर ही

आये थे कि आज आपसे कोई जादू देखेंगे। साधु एक प्याली ले आया। प्याली में उसने थोड़े से चावल रखे और उनमें पानी डालकर प्रमोद के सिर पर रख दिये।

प्रमोद ने प्याला सिर पर रखते ही अनुभव किया कि जैसे उसके सिर पर चावल पक रहे हों। राजेन्द्र और राकेश ने भी यही अनुभव किया।

जादू के इस खेल से तीनों बड़े प्रसन्न हुये और उनकी श्रद्धा इस साधु पर और भी बढ़ गई। साधु ने कहा—देखा, तुम लोगों ने जादू। मैने बिना आग जलाये ही चावल तुम्हारे सिर पर पका दिये। जानते हो इस खेल को दिखाकर मैं हजारों रुपया कमा चुका हूं। अफ्रीका में मेरे इस जादू को लोगों ने काफी पसन्द किया था।

अफ्रीका का नाम सुनकर इन तीनों साथियों का फिर कौतुहल शुरू होगया। वह लोग अफ्रीका के भ्रमण की कहानी सुनने को व्याकुल हो उठे। राकेश बोला—बाबा, जल्दी से आप भोजन करके अफ्रीका की कहानी सुनाइये।

साधु बोला—अच्छा भाई अच्छा, थोड़ा सब्र करो। मेरा खाना तो तैयार हो जाये। खाना तैयार हुआ, साधु ने थोड़ा थोड़ा खाना इन लड़कों को भी खिलाया।

खा पी लेने के बाद गोष्ठी शुरू हुई। साधु ने कहा—मालूम होता है कि तुम लोग अफ्रीका की कहानी सुनने को बड़े बेचैन हो। लो तो अफ्रीका की कहानी ही तुम लोग सुनो।

मैं अपने जादू के खेल दिखाता-दिखाता हिन्दुस्तान के बड़े बड़े शहरों का भ्रमण करने लगा। ऐसा तो तुम लोग जानते ही हो कि मैं तुम्हें कल ही बता चुका हूं। करीब दो वर्ष पहिले मैं गुजरात में अपने खेल दिखाने और भ्रमण करने के लिये गया था। वहीं मुझे समाचार पत्रों द्वारा यह विदित हुआ कि एक नृत्य मण्डली, पूर्वी अफ्रीका अपने प्रदर्शन के लिए जा रही है। मेरे मन में एकाएक विचार आया कि मैं भी इस नृत्य मण्डली से सम्पर्क स्थापित करूं तथा उनके साथ अफ्रीका की सैर को जाऊं। अतएव दूसरे ही दिन मैं इस मण्डली से मिला। मैंने अपने सम्बन्ध में सारी बातें बतला दीं। मण्डली के मैनेजर ने मेरी ख्याति तथा मेरे जादू के बारे में सुन रखा था। उसने सहर्ष मुझे अपने साथ ले जाने की प्रार्थना स्वीकार करली। इस प्रकार मेरा अफ्रीका जाने का निश्चय हुआ।

—: ० :—

यात्रा की तैयारियाँ

विदेश जाने के लिये मैंने पासपोर्ट के लिये अपना आवेदन-पत्र दिया। करीब १५ दिन कड़ी मेहनत और परिश्रम के बाद मुझे पासपोर्ट मिला। पासपोर्ट मिलने के बाद मुझे हैजा, चेचक, तथा पीला बुखार आदि का टीका लगवाना पड़ा।

इन सब कामों से फुर्सत पा चुकने के बाद मैं भ्रमण सम्बन्धी आवश्यक चीजें खरीदने में लग गया। अफ्रीका के सफर के लिये कुछ खास चीजें अपने साथ लेनी पड़ती हैं। जैसे मच्छरदानी, जूते का जोड़ा, हैट, कूनेन की बोतल, आदि। इसके अतिरिक्त कोट तथा ओवर-कोट की भी जरूरत पड़ती है। अफ्रीका देश वैसे तो बड़ा गर्म कहा जाता है, परन्तु उसके कुछ हिस्सों में काफी सर्दी पड़ती है और इसीलिये मुझे कोट तथा ओवर-कोट आदि लेने पड़े।

अफ्रीका जाने से पहिले मेरे दिमाग में हमेशा उस देश के बारे में बड़ा कौतुहल होता था। वहां की कुदरत, जंगली जानवर, काले हब्शी, इन सबके बारे

में मजेदार विचार मेरे मन में आते थे। मैं इस प्रकार के विचार करते-करते सो जाता और सपने देखने लगता था कि अचानक कोई प्रचंड हाथी मेरे सामने आकर खड़ा हो गया है। मै अफ्रीका के भूगोल को बड़े चाव से पढ़ा करता था ताकि वहां की अच्छी से अच्छी जानकारी मुझे हो जाये। मैं अफ्रीका के सम्बन्ध में छपी हुई तस्वीरें बड़ी देर तक देखता था लेकिन ऐसी तस्वीरें देखते समय लगता कि जब मैं खुद ही थोड़े दिनों में अफ्रीका के प्राकृतिक जीवन को बिल्कुल पास से देखूंगा, फिर यह कागजी तस्वीरें किस काम की।

आखिर मेरे अफ्रीका जाने का दिन नजदीक आने लगा। हम लोगों का जहाज़ बम्बई नगर से जाने वाला था। अतएव मैं अपने जादू के सामान के साथ बम्बई नगर पहुँचा। बन्दरगाह में देश छोड़ते वक्त मुझे दुःख और सुख दोनों का अनुभव हो रहा था।

दुःख मुझे अपने देश छोड़ने का और सुख एक नए देश देखने का था। आखिर मेरे जाने का दिन आ गया और मै नाटक मंडली के साथ जहाज पर सवार हो गया। जहाज ने जब बम्बई नगरी का

बन्दरगाह छोड़ा तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि झाग उछालती हुई हंसी के साथ नई जिंदगी की खोज में निकली हुई सागर की लहरों की तरह मेरी एक नई जिंदगी का श्री-गणेष हो गया है।

इतना कह बाबा ने इन तीनों साथियों की ओर देखा-तीनों साथी बड़े अचम्भे की मुद्रा में बाबा की कहानी सुन रहे थे। ऐसा मालूम होता था कि वे बहुत ही प्रभावित हुये हैं और अभी ही घर से निकल कर बाबा की तरह भ्रमण के लिये अपना जीवन लगा देंगे। बाबा ने कहा—अभी तो यह भूमिका हुई अब आगे अफ्रीका यात्रा का हाल सुनो।

—:•:—

जहाज का जीवन

जहाज़ में रेलवे की तरह कई एक दर्जे रहते हैं। डेक पर से भी मुसाफिर को ले जाने की सुविधा रहती है। डेक का किराया बहुत कम होता है। इस दर्जे में अधिकतर मजदूर आदि सफर करते हैं। जिन लोगों को ऊपर के दर्जे में जगह नहीं मिलती वे लोग भी इस दर्जे में सफर करते हैं। भारत से, अफ्रीका काफी हिन्दुस्तानी जाते हैं। अफ्रीका में भारतीयों की बड़ी-बड़ी दुकानें तथा मिल और फैक्टरियां हैं। हमारे जहाज के डेक पर काफी हिन्दुस्तानी सफर कर रहे थे जो अफ्रीका में खेती मजदूरी तथा कुली आदि का काम करते थे। मुझे सफर करने वालों में कुछ भारतियों से मिलने का तथा बातचीत करने का मौका मिला। उनकी बातचीत बड़ी दिलचस्प थी। इन्हीं भारतियों में एक आइसक्रीम बेचने वाला था। उसने करीब अब तक तीस बार भारत-अफ्रीका, की यात्रा की थी। वह अफ्रीका में काफी पैसा कमाता। तीन साल बाद हिन्दुस्तान आता और फिर यहां साल छः महीने रह

कुछ अपने गांव के अन्य हिन्दुस्तानियों को लेकर अफ्रीका चला जाता था। उसने मुझे अफ्रीका के निवासियों के बारे में बड़ी-बड़ी विचित्र बातें बताईं। एक बार उसने अपने हब्शी नौकर को आइसक्रीम का बर्तन बाहर से साफ करने को कहा। वह नौकर उस काम को नहीं जानता था। उसने आइसक्रीम का बर्तन उठाकर पानी में डुबो दिया और करीब २५ रु० का आइसक्रीम खराब कर दिया।

एक विचित्र अनुभव मुझे इसी प्रकार और हुआ। जहाज पर यात्रियों के मन बहलाव के लिये सिनेमा दिखाया जाता था। एक बार रात में इस सिनेमा को देखने के लिये कुछ सिक्ख लोग आये। सिनेमा सिर्फ दूसरे और डयोढे दर्जे के मुसाफिरों के लिये था। सरदार जी डेक यात्री थे अतएव उन्हें अन्दर जा सिनेमा देखने की इजाजत नहीं मिली। सरदार जी ने गेट कीपर से बड़ी विनय की अतएव उन्हें खड़े होकर सिनेमा देखने की इजाजत मिल गई। सरदार जी थोड़ी देर तक तो खड़े होकर सिनेमा देखते रहे पर बाद में उन्हें यह अपना अपमान लगा कि और लोग तो बैठकर सिनेमा देखें और वह खड़े होकर। वह चुपचाप एक कुर्सी पर बैठ गये लेकिन

गेट कीपर ने उन्हें कुर्सी से उठा बाहर कर दिया। सरदार जी गेट कीपर के इस व्यवहार से भड़क उठे और उसे मारने लगे। झगड़ा ज्यादा बढ़ गया था अतएव केप्टन आया और उसने झगड़ा शान्त कराया।

अफ़रीका का किनारा

मेरी आदत बचपन से ही प्रातः उठने की है। जहाज चलने के करीब पांच दिन बाद एक दिन जब मैं सोकर उठा तो देखा कि जहाज खड़ा है और सामने जमीन दिखाई पड़ रही है। मालूम करने पर पता चला कि यह मुबांसा का किनारा है। मुझे सामने सफेद साफ रेत की रेखा सी बनी दिखाई पड़ी। काला महाद्वीप के नाम से पुकारे जाने वाले इस महाद्वीप के दर्शन मुझे इस सफेद रेखा से हुए।

जहाज रुकने पर सारे मुसाफिरों की डाक्ट्री जांच शुरु हो गई। इस जांच में चेचक जैसे छूत के रोग का यदि कोई रोगी पाया गया तो जहाज के पास ही द्वीप पर रोक दिया जाता था। बाद में वह किनारे पर लाया जाता था।

डाक्टरी जांच समाप्त हो जाने के बाद किनारे से एक छोटा जहाज आता हुआ दिखाई दिया। उसे हब्शी खलासी चला रहे थे। इन खलासियों की पोशाक बड़ी अजीब थी। सफेद कमीज़, और सफेद

र, और सिर पर लाल मुसलमानी फुन्नेदार टोपी
ने थे। काले शरीर पर साफ, सुथरी पोशाक बड़ी
रही थी।

मुंबासा बन्दरगाह के सफेद किनारे के पीछे
ल खपरेल थे। छोटे छोटे घर दिखाई दे रहे थे
घरों की बनावट बड़ी ही आकर्षक थी।

जहाज से सामान उतारने के लिये कुलियों का
ऊपर बढ़ने के लिये पोतों में खड़ा था। ये कुली
। काफी तगड़े और स्वस्थ थे।

गोरी चमड़ी का हब्शी

प्रायः हम सब लोग जानते हैं कि हब्शी काले रंग के होते हैं परन्तु योरोपी और अरबी लोगों के आपसी शादी-विवाह जो कुछ लोगों में हुए हैं, गोरे हब्शी भी पैदा हो गये हैं। इन हब्शियों का रंग गोरा होता है लेकिन शरीर रचना बिल्कुल हब्शी की तरह होती है। फटा हुआ जांघिया पहने हुए इन हब्शी कुलियों की एक-एक पेशी गिनी जा सकती है। बाजू, जांघ, सीना, गर्दन सब कुछ पुष्ट नज़र आते हैं। अफ्रीका और भारत के बीच में सिसली द्वीप में ऐसे गोरे हब्शियों की संख्या काफी है।

मुबांसा शहर में बहुत सी हिन्दुस्तानियों की दुकानें हैं। प्रायः अधिकतर दुकानों के मालिक गुजराती हैं। इस बड़े शहर की मुख्य भाषा स्वाहिली होने पर भी दूसरी भाषा के तौर पर गुजराती भाषा का इस्तेमाल किया जाता है। यहाँ गुजराती स्कूल हैं—मंदिर और गुजराती ढंग के होटल भी हैं। यहां के हब्शी भी गुजराती बोलते हैं। एक हब्शी कुली के

मुंह से मैंने खबोदाड़ शब्द सुना। यह भारत के खबरदार शब्द से बिगड़ कर बना है।

मुंबासा शहर के रास्ते साफ थे और चारों ओर शान्ति थी। हब्शी लोग एक दूसरे से बोलते समय धीरे-धीरे बोल रहे थे। लेकिन उनकी हंसी गड़गड़ाहट की तरह लगती थी। गुजराती और मुसलमानों की दुकानों की रचना बड़ी आकर्षक नजर आयी।

मुंबासा की मण्डी बड़ी आदर्श है। मार्केट में हब्शी व्यापारी भी दिखाई दिये। साग, सब्ज़ी बेचना ही बहुतों का व्यापार था। एक मोटे से हब्शी को मैंने सिर पर पंखा लगाकर और एक पैर में घुंघरू बाँधकर गाते नाचते देखा। वह बहुत तेजी से शब्द बोल रहा था। उसके पास तमाखू के सूखे पत्ते थे। वह पत्ते बेचने के लिये ही खड़ा था और खरीदारों का ध्यान आकर्षित करने को गाना गा रहा था।

मार्केट के बाहर ही कुछ मुसलमानी होटल थे। पास में पान की दुकान और उसके साथ में रोटियां बनाने के लिये खुली जगह में अंगीठी रखी थी। बिल्कुल हमारे हिन्दुस्तानी बाजार जैसा दृश्य दिखाई पड़ता था। परन्तु वहां भी रोटी बनाने का तरीका

बड़ा विचित्र था। आटा कुछ ढीला गूंध कर और बाद में कढ़ाई औंधी रखकर चपटा किया जाता था। इसके बाद कढ़ाई औंधी रखकर उस पर थपथपाया जाता था।

—: ० :—

लौंग का द्वीप

मुंबासा शहर घूमने के बाद मैं दारेसलाम के लिये फिर जहाज पर वापस आया—रास्ते में मुझे

जांजीवार टापू मिला। यह एक छोटा लेकिन मज़ेदार टापू है। इस टापू के अरबों के पास कमानीदार छुरा होता है। उसे वे अगली ओर कटार की तरह खोंस कर रखते हैं। इस टापू में लौंग का बड़ा व्यापार होता है। किनारे के पास लौंग के बड़े बड़े ढेर थे। कुछ घरों के पिछवाड़े भी लौंग सुखाई जा रही थी। इस टापू में हाथीदांत और कपड़ा बहुत सस्ता मिलता है। इस टापू के केले बड़े प्रसिद्ध हैं। तुम लोगों को सुनकर आश्चर्य होगा कि एक-एक केला छोटे कद्दू का सा बड़ा होता है। इन केलों की कुमनी बनाकर विदेश भेजी जाती है। प्रायः सारी दुनिया के हिस्से में इस देश से लौंग भेजी जाती है।

प्रमोद और उसके साथी अब तक बिल्कुल चुपचाप थे पर कद्दू जैसे केले के बारे में सुनकर वे चुप न रह सके प्रमोद ने पूछा—बाबा कद्दू जैसे केले को लोग खाते कैसे होंगे, वह मुंह में कैसे आता होगा। बाबा हंसे और बोले—तुम लोगों ने ठीक ही प्रश्न पूछा है। वहाँ के लोग छीलकर टुकड़े करके खाते हैं। एक आदमी को एक केला खाना मुश्किल है।

तीनों मित्रों की जिज्ञासा का उत्तर मिल गया था। बाबा ने आगे अपनी यात्रा का हाल शुरू कर दिया।

दारे सलाम में

जंज़ीबार से मैं जहाज पर दारेसलाम पहुँचा। यह एक बड़ा शहर है। इस शहर में महाराष्ट्री और गुजरातियों की संख्या काफी है। महाराष्ट्री लोग बड़े बड़े ओहदे पर काम करते हैं।

अब तक अफ्रीका के बारे में मैंने धारणा बना रखी थी कि अफ्रीका जानवरों और काले मनुष्यों का देश है। इस देश में गौरीला, वनमानुष, और जंगली भैंसे, हाथी तथा शेर ही हैं। परन्तु मुंबासा और दारेसलाम जैसा शहर देखने के बाद धारणा बदलने लगी। यह शहर बिल्कुल बम्बई जैसा है। सभी प्रकार की सवारियां, स्कूल, इमारतें, सुंदर-सुंदर सड़कें और पसीना बहाने वाली हवा सबकुछ—बम्बई की तरह यहां था। लेकिन यह तो अफ्रीका का ऊपरी भाग ही है। अफ्रीका का सही दर्शन तो युगांडा में मिलता है, जहाँ अफ्रीका का सारा खजाना छिपा पड़ा है।

अफ़रीका में पहला जादू—प्रदर्शन

मेरे पास के पैसे करीब करीब समाप्त हो गये थे। अब तक यात्रा में और घूमने, फिरने में मैं बड़ी लापरवाही से खर्च कर रहा था। अतएव मैंने एक दिन एक स्कूल में अपने जादू के खेल का प्रर्दशन किया। मैंने बच्चों को, सिर पर चावल पकाने वाला खेल दिखाया तथा कुछ तीरंदाजी के खेल दिखाये। लोग मेरा खेल देखकर बड़े प्रसन्न हुये। स्कूल के हेड-मास्टर साहब ने भी मेरी प्रशंसा की।

इस खेल के प्रदर्शन में मेरी स्कूल के हेडमास्टर से काफी घनिष्टता तथा मित्रता हो गई। मेरे कौशल पर वह बड़े ही प्रसन्न थे। हेडमास्टर साहब को शिकार का बड़ा शौक था। उन्होंने मुझसे शिकार पर चलने का आग्रह किया। मैं उनके साथ अफ्रीका के शिकार के अध्ययन का लोभ न रोक सका और चलने को राजी हो गया। एक अंधेरी रात में उनके दो हब्शी नौकर और हमारी पार्टी के पांच लोग दो मोटरों पर सवार होकर चल पड़े। हमारे साथ तीन

रायफलें एक स्टेनगन और दो पिस्तौल थीं। शहर की जगह से शिकार की जगह लगभग तीस, पैंतीस मील थी।

रास्ते में हेडमास्टर साहब ने शिकार की आप बीती कहानियां सुनाईं। उनकी साहस भरी कहानी इतनी दिलचस्प थी कि यह भी पता न चला कि हम कब जंगल के मुहाने पर आ पहुँचे। मोटर के ऊपर एक सर्चलाइट का यंत्र फिट था। उस पर एक आदमी बैठकर सर्चलाइट की रोशनी चारों ओर घुमाता है। इस सर्चलाइट द्वारा ही हेडमास्टर साहब अपने शिकार को फंसाते थे।

सर्चलाइट द्वारा एक विचित्र प्रकार से शिकार

सर्चलाइट द्वारा एक विचित्र प्रकार से शिकार किया जाता है। उसका तरीका इस प्रकार है :—

छत पर बैठा आदमी सर्चलाइट को इर्द-गिर्द घुमाता है। इस रोशनी में जंगली जानवरों की आंखें लाल-लाल दिखाई देती हैं। वह जानवर रोशनी की ओर देखते-देखते एक ओर खड़े रह जाते हैं। जंगल में लाल आंखें दिखाई देते ही छत पर बैठा आदमी मोटर रोकने का इशारा करता है और बाद में चमकने वाली आंखों का अंदाजा लगाकर बंदूकें दागी जाती हैं।

हेडमास्टर साहब अभयस्त शिकारी थे। उन्होंने दो हिरन तथा आठ खरगोश मारे। अफ्रीका में इस तरीके के अलावा शिकार के दूसरे तरीके भी प्रचलित हैं। न्यामा नामक तरीका बड़ा आसान होता है। मरा हुआ जानवर किसी पेड़ से बांध दिया जाता है। उसके चारों ओर खास तरह के पिंजड़े लगाये जाते हैं। जंगली जानवर खासकर सिंह का उस मरे हुये

जानवर को खाने के लिये आते ही एकदम उस जंगली जानवर का पैर उस जाल में फंस जाता है। उससे निकलने के लिए वह बहुत छठपटाता, चीखता, चिल्लाता है। चीख-चीख कर थक जाने पर वह लाचार पड़ा रहता है। इस तरीके में शिकारी के पास बैठे रहने की जरूरत नहीं होती। वह आराम के साथ सुबह उठकर आता है और गोली से शिकार मारता है।

इन दोनों तरीकों के अतिरिक्त एक और अन्य तरीका भी है लेकिन वह है बड़ी हिम्मत का। शिकारी अपने साथ एक दो साथियों के साथ बंदूक उठाकर जंगल में पैदल चला जाता है और जंगली जानवरों पर आमने, सामने हमला करता है।

अफ्रीका में इस तरह के शिकार सिर्फ योरपी लोग ही करते हैं। लेकिन इससे यह न समझना चाहिये कि अफ्रीका के लोग यूरोप के लोगों के मुकाबले में कमजोर या बुजदिल हैं। मासाई लोग बंदूक इस्तेमाल करने में अपनी बेइज्जती मानते हैं। वे लोग बरछे से शिकार करने में बड़े उस्ताद हैं। शिकार के समय यह लोग अपने सिर पर पेड़ों की टहनियां बांधते हैं और मुँह पर लाल मिट्टी लगाकर

उस पर सफेद धारियां खींचते हैं। मसाई शिकारी देखने में ऊँचे और शरीर से दुबले पतले होते हैं।

हम लोग मोटर पर शिकार से वापस लौटे। रास्ते में हैडमास्टर साहब ने अफ्रीका के शिकार के विषय में अन्य और दिलचस्प कहानियां सुनाईं। उनकी कहानियां बड़ी विचित्र थीं। उन्होंने धावा करने वाली भैंसों के विषय में बतलाया। अफ्रीका में जंगली भैंसों का शिकार करना सबसे मुश्किल समझा जाता है। ये भैंसें बड़ी ताकतवर और बिग-ड़ैल होती हैं। शिकारी पर एक साथ हमला करने की ताकत और आदत, इन भैंसों और हाथियों के सिवाय दूसरे किसी जानवर में नहीं पाई जाती। जंगली भैंस गोली लगते ही जिस ओर से गोली आई हो उस ओर मुड़कर शिकारी पर एकदम धावा बोल देती है। एक साथ तीन चार गोलियां सिर में घुसने पर भी वह नीचे नहीं गिरती। जख्मी भैंस जिस ओर दौड़ी हो उस ओर दूसरी भैंसें भी दौड़ने लगती हैं। सभी भैंसों का यह कार्य होता है कि वे शिकारी को चारों ओर से घेर लेती है। यदि शिकारी पेड़ पर बैठा हो तो ये भैंसें उस पेड़ के आस पास, कभी-कभी दो–दो, तीन–तीन दिन तक खड़ी

रहती हैं।

हब्शियों को इन भैंसों का मांस बहुत भाता है। कुछ हब्शी दल इन डरावनी भैंसों का शिकार करने में बड़े साहस का परिचय देते हैं। शिकारी दो गिरोह बनाकर शिकार को चलते है। एक गिरोह दूर हो जाता है और दूसरा भैंसों के झुंड के पास छिपकर बैठा रहता है। भैंसों की आंख फोड़ दी जाती हैं। भैंस को तीर लगते ही झुंड को इस बात का पता चल जाता है कि पास में कहीं दुश्मन छिपा बैठा है। उसकी टोह पाने के लिए भैंसें कान खड़े कर लेती हैं। भैंसों का झुंड उसी दिशा में दौड़ता है। तब शोर मचाने वाले लोग पेड़ों से बांधी हुई रस्सियों से झोंके लेते हुए दूर निकल जाते हैं। इधर झुंड से दूर जाने का यकीन होने पर शिकार के पास छिपकर बैठे हुए लोग नीचे उतर आते हैं और उस अंधी भैंस को हथियारों से कत्ल कर देते है। मरी हुई भैंस को पेड़ों की टहनियों और पत्तों से ढक देते हैं। दुश्मन का पीछा करने वाली भैंसों को जब अपनी जख्मी भैंस की याद आ जाती है तो वे लोगों का पीछा छोड़कर लौट आती हैं। थोड़ी देर तक खोजने के बाद वे जंगलों की ओर लौट जाती हैं। घन्टे दो घन्टे

के बाद हब्शी लोग नीचे उतरते हैं और शिकार को उठा कर बस्ती को लौट आते हैं

सरकार ने हब्शियों को बन्दूक का लाइसेन्स नहीं दिया है। इसलिए उन्हें सभी जंगली प्राणियों का शिकार तीर, बरछे से या तरह-तरह की तरकीबें लड़ाकर करना पड़ता है। दरियाई घोड़े के शिकार के लिए सरकार के खास परवाने की जरूरत होती है लेकिन हब्शियों के दल चोरी से इसका शिकार करते हैं। दरियाई घोड़े का बहुत सा मांस बेकार चला जाता है क्योंकि यह ज़हरीले तीरों से किया जाता है। अतएव इस ताक़तवर जानवर का शिकार एक बड़े साहसी तरीके से किया जाता है।

दरियाई घोड़े का शिकार

दरियाई घोड़ा हिलती हुई रोशनी को अपना दुश्मन मानता है। कभी-कभी तालाब के किनारे जाती हुई मोटर की रोशनी को देखकर दरयाई घोड़े उसे धक्के देकर चकनाचूर कर देते है। दरयाई घोड़े की इसी आदत से हब्शी लोग फायदा उठाते हैं।

बड़े-बड़े तालाबों में दरियाई घोड़े के झुंड का पता लगाया जाता है। बाद में उसी ओर एक बड़ा सा पेड़ निश्चित कर लिया जाता है। उस पेड़ की लगभग ढाई-तीन फुट की ऊँचाई पर उलटी कीलें ठोकी जाती है। पेड़ पर कुछ पत्थर भी लाकर रखते है। दरियाई घोड़ा दिन भर पानी में रहता है और रात में घास खाने के लिए बाहर आता है। अंधेरा होने से पहले एक रस्सी और मशाल लेकर शिकारी कीलों वाले पेड़ पर जा बैठता है। दरियाई घोड़ों का झुंड पानी से बाहर आता है। उन घोड़ों में से कोई घोड़ा चरते-चरते उस पेड़ के पास से गुजरता है। उसी समय एक आदमी की कमर में रस्सी बांध

कर पेड़ के नीचे उतार दिया जाता है जिसके हाथ में जलती हुई मशाल होती है। दरियाई घोड़ा सामने जलती हुई मशाल हिलते ही अपनी आदत के मुताबिक उससे टकराने के लिए दौड़ता है। दरियाई घोड़े के पास आते ही पेड़ पर बैठे हुए लोग मशाल वाले को झटके से ऊपर उठा लेते है। घोड़ा बड़ी तेजी से पेड़ से टकराता है। पेड़ में लगी हुई कीलें उसके सिर में घुस जाती हैं। उसी समय जख्मी जानवर पर ऊपर से पत्थर फेंके जाते है और थोड़ी ही देर में वह ज़मीन पर गिर जाता है। इस शिकार मे दो बातों की बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है। एक तो मशाल वाले को फौरन उठा लेना चाहिए। अगर इसमें ज़रा भी विलम्ब हो जाए तो मशाल वाले का चकनाचूर हो जायेगा। दूसरी बात यह है कि ऊपर बैठे हुए लोगों को अच्छी तरह से पकड़ कर बैठना चाहिये—दरियाई घोड़े की टक्कर से पेड़ जोर से डोलने लगता है। अगर पेड़ को अच्छी तरह से न पकड़ा हो तो टहनी हिलाते ही पके हुए जामुन की तरह ऊपर बैठे हुए लोग नीचे गिर पड़ेंगे और घोड़े के साथ-साथ उनका भी शिकार हो जायेगा।

हेडमास्टर साहब का रोचक शिकार का वर्णन

हम लोगों को बहुत ही प्रिय लग रहा था। रास्ता अभी काफी था अतएव उन्होंने मगर के शिकार के सम्बन्ध में भी कुछ बातें बतलाईं।

मगर के शिकार में हिम्मत की कोई विशेष जरूरत नहीं होती। टारजन के सिनेमा में हम जैसे मगर देखते हैं बिल्कुल वैसे ही मगर अफ्रीका में होते हैं। प्रायः अफ्रीका के सब तालाबों में मगर होते हैं। मगर का शिकार दोपहर को करना बड़ा आसान है। उस समय वे तालाब में छोटे टापू पर धूप खाने के लिए बैठे रहते हैं। शाटगन उठाकर आंखे मूंदकर अगर घोड़ा दबा दिया जाये तो एक आध मगर मरा हुआ दिखाई देगा। मगर को मारना जितना आसान है उतना ही पानी से बाहर निकालना मुश्किल है। मगर का शिकार मांस और खाल के लिए किया जाता है। उसकी खाल से जूते, ढालें, वगैराह चीजें बनती हैं।

अफ्रीका में शिकार करने में सिक्ख लोग भी बड़े कुशल हैं। जंगल काटकर सिक्ख लोग यहां खेती करते हैं।

जोगिया बाबा काफी थक गये थे। उनका गला सूख आया था। प्रमोद, दौड़कर पानी ले आया। सभी

लोग पानी पीकर ठंडे हुए। बाबा ने बच्चों से कहा—कहो, कुछ मज़ा आया।

प्रमोद और राकेश ने सिर हिलाया पर राजेन्द्र बोल उठा—बाबा बड़ा मज़ा आया। पर यह तो बताईयेगा कि आपने भी मांस खाया या नहीं। शिकार पर जब आप गये तो गोश्त खाया होगा।

राम···राम···राम···राम···क्या बकते हो। ठहर तो शैतान ? मुझे चिड़ाता है। कहते हुए बाबा उसकी ओर लपके।

राजेन्द्र हंसता हुआ भाग खड़ा हुआ। प्रमोद और राकेश भी पीछे-पीछे दौड़े, बाबा ने राजेन्द्र को पकड़ लिया और घसीटते हुए तालाब की ओर ले चले—लेकिन रास्ते में ही उसने बाबा से क्षमा मांग ली। बाबा ने कहा—अच्छा दुष्टों। अब में तुम्हें आगे का हाल नहीं सुनाऊंगा। तुम लोग मुझे चिड़ाते हो।

प्रमोद और राकेश दानों ने राजेन्द्र को डांटा और फिर बाबा की बड़ी विनय कर उन्हें मनाया। लेकिन बाबा ने कहा—अगर आगे से मुझे चिड़ाओगे तो तुम लोगों को जादू से मछली बना इस तालाब में डाल दूंगा।

सब लोगों ने बाबा की शर्त मान ली।

बाबा ने कहा—अच्छा बोलते-बोलते मैं थक गया हूँ। यह लो एक रुपये का नोट और लोटा ले जाकर दूध और कुछ नमकीन ले आओ। थोड़ी-थोड़ी सब चाय पीकर नमकीन खायेंगे, इसके बाद आगे के हाल का मै वर्णन करूंगा।

राजेन्द्र दूध लाने गया। प्रमोद चूल्हा सुलगाने लगा और राजेन्द्र चाय तथा चीनी ले आया। सब लोगों ने दालमोठ तथा समोसे के साथ चाय पी। फिर बाबा अपनी साहसी यात्रा का हाल सुनाने लगे।

काले पानी की बीमारी

बाबा चाय आदि पीकर फिर से तरोताज़ा हो गए। तीनों दिलेर साथी भी प्रसन्न चित्त हो कौतुहल पूर्वक आगे का हाल जानने को उत्सुक हुए। बाबा ने कहना शुरू किया।

दारेसलाम देखने के बाद हम आगे को रवाना हुए। रेलगाड़ी के डिब्बे हमारे भारतवर्ष जैसे ही थे पर उसमें सोने के लिए अच्छा इन्तजाम था। डिब्बे में चारों ओर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा था—सोते समय मच्छरदानी लगाना मत भूलिये। गाड़ी में मच्छरों के झुंड के झुंड घूम रहे थे। मच्छरों के काटने पर मलेरिया हो जाना कोई बड़ी बात नहीं समझी जाती। मच्छरों से होने वाली खोफनाक बीमारी है ब्लेक डिसीज—यानी काले पानी की बीमारी। इस बीमारी के होने पर बीमार को पेशाब काला आने लगता है और वह उस बीमारी में चल बसता है।

ऐसी बीमारी से बचने के लिए हफ्ते में तीन, चार बार कुनेन खानी पड़ती है। मच्छरदानी के

बिना सोना ठीक नहीं और इसीलिए रेल में जाली-दार खिड़कियां होने पर भी मच्छरदानी लगाने की सावधानी रखनी पड़ती है।

अफ्रीका में बड़े शहर थोड़े ही हैं। इसलिए रेलगाड़ी में दो-दो दिन बिताने पड़ते हैं। लेकिन इस सफर में आदमी उक्ताता नहीं। आसपास चारों ओर फैले हुए हरियाले प्रदेश और जंगली जानवर मुसा-फिरों का दिल बहलाते हैं। छोटे-छोटे स्टेशनों पर हब्शी लोग काठ के खिलौने और कुर्सियां बेचने आते हैं। कुर्सी को हब्शी—कीटी कहते हैं। ये हब्शी काठ से प्राणियों की शक्लें बनाने में बड़े कुशल हैं।

—: o :—

मांग काढ़ने वाली औरत

डोडोमा आने पर हमें अब असली अफ्रीका का आभास होने लगा। तुम्हें मालूम ही है कि मैंने पहिले ही कहा है कि अब तक के शहर मुझे बिल्कुल भारतीय शहर जैसे लगे थे। पर इस शहर में हमें विभिन्न जातियों के हब्शी दिखलाई पड़े। 'विभिन्न

जातियों के हब्शी'—प्रमोद आश्चर्य से बोला। क्या हब्शी भी कई जातियों के होते हैं ?

हां, बाबा ने उत्तर दिया। अफ्रीका एक महाद्वीप है। उसमें भिन्न भिन्न प्रान्तों, शहरों में बसने वाले हब्शी विभिन्न जातियों के होते हैं। मुझे इस शहर में हब्शियों का रंग बिल्कुल कोलतार की तरह काला दिखलाई पड़ा। उनके ओंठ मोटे मोटे और सिर के बाल छोटे सूखे और घुंघराले थे। इन हब्शियों में मांग, पट्टी करने का बड़ा रिवाज है, जिसका तरीका बड़ा अजीब है। यह तरीका बड़ा प्रचलित है। हमारे भारत में जैसे पेशेवर गोदने वाले होते हैं वैसे ही अफ्रीका में मांग पट्टी करने वाली औरतें है। जानते हो यह मांग भरने वाली औरतें क्या करती हैं, सुनो।

इन औरतों के पास एक मटका होता है। इस मटके में किसी खास पेड़ का लासा होता है और उनकी थैली में कुछ हथियार होते हैं। उनके हथियारों में एक हथियार जैसे अपने यहां के चमारों के पास रांपी होती है, वैसा होता है। जिस स्त्री या पुरुष को मांग पट्टी करानी होती है वह उस औरत के पास जाता है। मांग पट्टी करने वाली औरत

अपने हिन्दुस्तान के नाई की तरह पहिले अपने हथियार तेज़ करती है। और फिर जहां मांग भरनी हो वहां सफेद लकीर लगा देती है। लकीर लगाने के बाद वह उस रांपी के हथियार से सफेद लकीर के नीचे सिर का चमड़ा कुतरती जाती है। खून तो बहता ही है लेकिन चमड़ा कुतर लेने के बाद मटके का लासा जख्म पर लगाते ही वह बन्द हो जाता है। इसके बाद बालों को ठीक ढंग से सवांर कर उन पर गीला कपड़ा रखा जाता है। इसके बाद बालों के ठीक पास जलती हुई गर्म इस्त्री फेरी जाती है। इस तरह पूरी माँग हमेशा के लिये बनी रहती है।

प्रमोद यह सुनकर चीं बोल गया। राजेन्द्र और राकेश के मुंह से भी च-च निकला। बाबा ने कहा-बस सुनते ही घबड़ा गये। हम लोगों ने तो इस दृश्य को देखा और मांग पट्टी करते हुये देखकर तो हमारे रोंगटे खड़े हो गये, लेकिन हब्शी लोग बड़े मजे से बिना आह किये ही मांग पट्टी करवाते हैं। कुछ औरतें तो अपने सिर पर छोटी छोटी पांच छः मांगें करवाती हैं। शहर में रहने वाली हब्शी औरतें अंग्रेजी मेम की तरह पोशाक पहनती हैं। उनके पति

जांघिया और रंगीन कमीज़ पहनते हैं। पढ़े लिखे हब्शी बाबू सूट-बूट भी पहन लेते हैं। कुछ हब्शी मुसलमान हैं। उनकी औरतें काले रंग का बुरका पहनती हैं। यह एक ताज्जुब की बात है कि इतने गर्म मुल्क की औरतें बुर्के पहन लेती हैं।

कलाकार हब्शी

डोडोमा में मैंने अपने खेल का प्रदर्शन किया। लोगों ने खेल को काफी पसन्द किया। लोगों ने खेल को देखने के बाद मेरे जादू की काफी सराहना की। खेल के बाद एक हब्शी बल्कल पर कसीदा काढ़ा हुआ एक चादरा मुझे भेंट देने के लिए स्टेज पर आया। यह शाल बड़ा सुन्दर था। बल्कल का उपयोग बिछावन के लिये किया जाता है। उसमें काठ के सब गुण विद्यमान हैं। फ़र्श पर उसे इकहरा बिछाकर सोया जाय तो भी सर्दी नहीं लगती। यह बल्कल धोए भी जा सकते हैं। बल्कल को बिजली छू जाने पर इसमें धक्का नहीं लगता।

बल्कल की इतनी तारीफ सुनकर राजेन्द्र से न रहा गया बोला—बाबा अच्छा वह आपका भेंट में मिला हुआ बल्कल है कहां? ज़रा हम लोग भी तो देखें।

बाबा ने कहा—तू बड़ा शैतान है। हर एक चीज खोद खोद कर जाने बिना नहीं रहता। जा मेरे बिस्तरे को खोलकर ले आ। सब लोग उसे देख लो।

राजेन्द्र ने झट से बाबा का बिस्तर खोला और बल्कल निकाल लाया—सभी साथियों ने उसे देखा और प्रशंसा की।

लेकिन प्रमोद इतने से ही बस करने वाला नहीं था। उसने बाबा को बड़े प्यार तथा आदर से सम्बोधित कर कहा—अच्छा जोगिया बाबा। अगर हम लोग इस बल्कल पर बैठकर आपकी यात्रा का वर्णन सुनें तो कैसा हो। इस पर बैठकर सुनने से हमें कुछ और ही आनन्द आयेगा। हम अनुभव करेंगे जैसे हम अफ्रीका की धरती पर ही बैठे हों।

बिछालो दुष्टो, बिछालो। मैं कहां आकर फँस गया हूं। अगर मुझे पता होता तो कभी भी अपनी बरगद वाली कोठरी में लौट कर न आता, जोगिया बाबा कुछ झल्लाते हुये बोले।

तीनों साथियों ने झट पट उस बल्कल को बिछा लिया। वह अब तक बाबा के स्वभाव से परिचित हो गये थे। बाबा का क्रोध बिल्कुल बनावटी होता था। सचमुच वह बच्चों को प्यार करते थे और उनकी प्रत्येक बात के आगे झुकने को तैयार हो जाते थे किन्तु बनावटी क्रोध के साथ।

पैर को छेदने वाला कीड़ा

अच्छा तो मेरे दिलेर साथियों तुम्हें याद है जबकि बम्बई से चलते वक्त मैं दो जोड़ी जूते ले गया था, बाबा बोले।

तीनों ने एक स्वर में कहा—हां, हां हमें अच्छी तरह याद है। तो फिर उसका राज़ सुनो कि अफ्रीका में क्यों जूते अत्यावश्यक हैं। वहां एक प्रकार का डुडू नाम का कीड़ा होता है। इन कीड़ों की लार में एक ऐसा गुण है कि जब वे पैर को छेदते हैं तब पीड़ा नहीं होती लेकिन कीड़ों के एक हद तक अन्दर जाते ही पैर सूज जाता है। पैर बिल्कुल हाथी के पांव सा मोटा हो जाता है और बुखार आने लगता है। अन्त में इन कीड़ों को आपरेशन द्वारा बाहर निकालना पड़ता है। कुछ हब्शी इन कीड़ों को हथियार से निकालने में बड़े निपुण होते हैं।

कन्द मूल और शराब

डोडोमा में लकड़ी के बड़े-बड़े कारखाने हैं इनमें हब्शी काम करते हैं। इन लोगों को बहुत कम मज़दूरी मिलती है। परन्तु यह लोग इस कम मज़दूरी में भी मस्त रहते हैं। वे अपनी दिन भर की कमाई शराब में खर्च कर देते हैं।

राजेन्द्र बोला—तो फिर खाते क्या हैं। बाबा ने मुस्करा कर कहा—बताता हूँ भाई बताता हूँ। ज़रा शान्त तो रहो। ये हब्शी लोग पेट पालने के लिये पैसा नहीं कमाते। ये लोग मौहोंगो नामक एक कंद जो यहां बहुतायत से मिलता है खाकर पेट भरते हैं। इस कंद के खाने से भूख नहीं लगती। इस कंद के खाने के तरीके अलग-अलग हैं। बड़े-बड़े कंद यह लोग घर लाकर छीलते हैं। उनकी फांकें बनाकर सुखाते हैं और फिर उसका आटा पीसकर उसे पकाते हैं। यह पकाया हुआ आटा बिना नमक मिर्च के ही खाया जाता है। भुने हुये कंद खाने में बिल्कुल

शकरकंद जैसे लगता है। यह कंद पचने में बड़े भारी होते हैं।

हब्शी लोग इस कंद को खाकर पेट भरते हैं और पैसे से शराब खरीदकर पीते हैं।

प्रमोद बोला—ऐसा कंद भी आप अफ्रीका से लाये होंगे। हम लोगों को भी खिलाइये।

न-न मैं यह सब अफ्रीका से कुछ भी नहीं लाया। चुपचाप कहानी सुनते जाओ, ज्यादा लालच न करो, बाबा बाले। प्रमोद बिचारा चुपचाप कहानी सुनने लगा।

—: ० :—

ताबीज़ की मांग

अफ्रीका में हिन्दुस्तान से काफी सिक्ख लोग गये हैं। वे लोग वहां खेती बाड़ी तथा मिल में काम करते हैं। एक सरदार जी का एक लकड़ी का बड़ा व्यापार तथा कारखाना था। मेरे आने की जब उन्हें खबर लगी तो बड़े विनय से मुझे अपने कारखाने पर आने को कहा मैं उनका कारखाना उनकी मोटर में बैठकर देखने गया। कारखाने पर पहुँचने पर बहुत से सिक्ख तथा हब्शी मेरे स्वागत को दरवाजे पर आये। मैंने कुछ स्वाहिली भाषा अब तक सीख ली थी। हब्शी लोगों से मैंने इस भाषा में बात की तथा सिक्खों से पंजाबी में।

अफ्रीका के लोग सिक्ख को सिंगा-सिंगा, कहते हैं। दूसरे हिन्दुस्तानी लोगों की बनिस्बत अफ्रीकी लोग सिक्खों से बहुत डरते हैं।

मिल के अफ्रीकी और भारतीय दोनों ने ही मुझसे कुछ खेल दिखाने के लिये कहा। मैंने उनके आग्रह पर कुछ खेल दिखाये।

खेल खत्म होने के पश्चात कुछ अफ्रीकी लोगों ने मुझे घेर लिया। मेरी साधु जैसी वेश-भूषा और जादू के खेलों से उन्होंने मुझे कोई भारत का सिद्ध संत मान लिया था। कुछ लोगों ने मुझसे स्वाहिली भाषा में गंडा, ताबीज आदि मांगा।

मैं कोई ताबीज आदि न देता था इससे उन अफ्रीकियों को बड़ी निराशा हुई।

—: ० :—

अफ़रीका का बादाम

मैं डोडोमा से आगे बोरा शहर की ओर गया यह सफर बड़ा लम्बा था । रास्ते में इलायची के पेड़ हैं । खजूर के भी बहुत से पेड़ नजर आते हैं । एक-एक डाली पर सैकड़ों फल होते हैं । इस शहर का मुख्य व्यापार खजूरों का है । खजूरों को अफ्रीका का बादाम कहते सुन प्रमोद को बड़ी हैरानी हुई । पूछ ही बैठा-बाबा, खजूर को अफ्रीका का बादाम कहने के क्या माने हैं ।

इससे पहले कि बाबा जवाब दे, राकेश बोल बैठा-अरे बुद्धू तू इतना भी नहीं समझता । जिस प्रकार बादाम ताक़तवर होता है उसी प्रकार अफ्रीका वासियों के लिये खजूर ताक़तवर मेवा है । इसीलिये इसे अफ्रीकी बादाम कहते हैं । प्रमोद गुस्से में बिगड़कर बोला—अच्छा-अच्छा ज्यादा अक्लमन्दी मत बघार वर्ना तेरी अक्ल मंद हो जायेगी ।

बाबा इन दोनों की तू-तू को चुपचाप मुस्कराते हुये सुनते रहे, फिर बोले-अच्छा मैं तुम्हें अफ्रीका के लम्बी टांगों वाले जिराफ के बारे में कुछ बताता हूँ, सुनो ।

प्राकृतिक चिड़ियाघर

बोरा से मैं मांभा शहर की ओर चला। भूमध्य रेखा के पास बसा हुआ यह शहर कैसा होगा, बार-बार इस प्रकार के विचार मेरे मन में आते थे। रेल द्वारा करीब दो दिन का यह लम्बा सफर था। लेकिन आसपास फैले हुये कुदरत के खूबसूरत खजाने से मन बिल्कुल ही नहीं उक्ताता था। घंटों जंगल के जानवर देखने में गुज़र जाते थे। रेलगाड़ी की घड़घड़ाहट से यह जानवर चौंक पड़ते थे और दौड़ने लगते थे। प्रत्येक जानवर के दौड़ने का ढंग अलग-अलग था। शुतुरमुर्ग अपनी ऊँची गर्दन नीचे ऊपर हिलाते हुये डैने फैला कर भागते तो जिराफ लम्बे-लम्बे डग मारते हुये हुदड़म-हुदड़म आवाज़ कर दूर भाग खड़े होते। यह सब आँखों को लुभाने वाला नज़ारा था। पलक मारते ही छोटे, बड़े, सैकड़ों हिरन हवा में उछलते हुये ओझल हो जाते और जब इस तरह सारे जानवर भागने लगते तब पेड़ों पर बैठे बंदर यहां, वहां उछलने कूदने लगते। अफ्रीका के जानवरों की

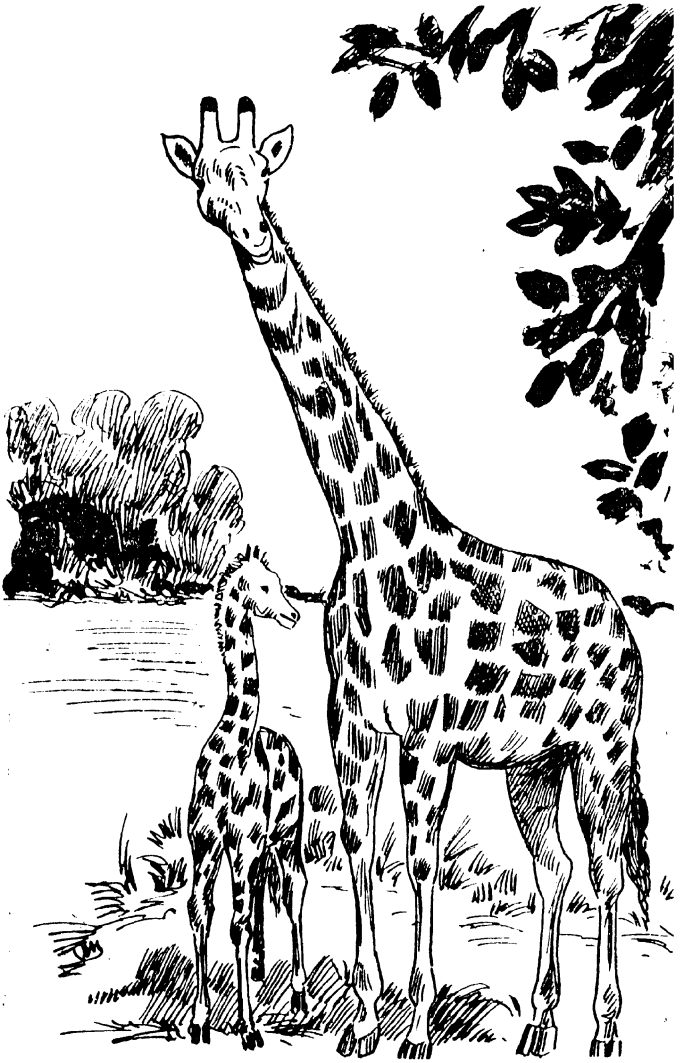

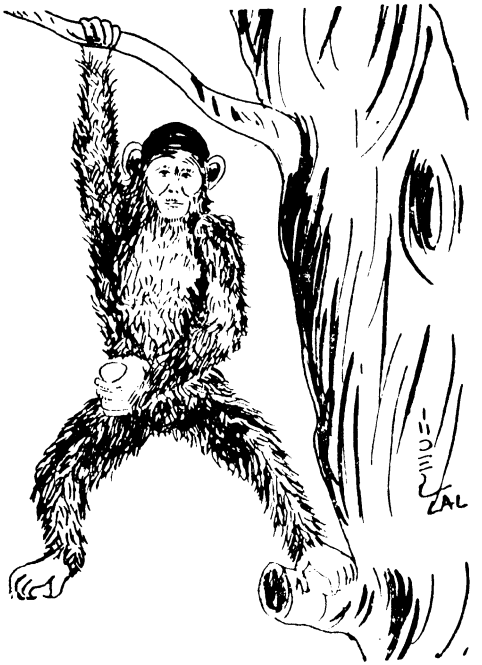

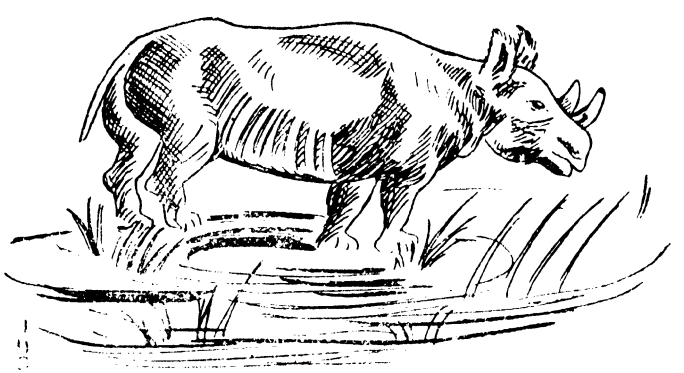

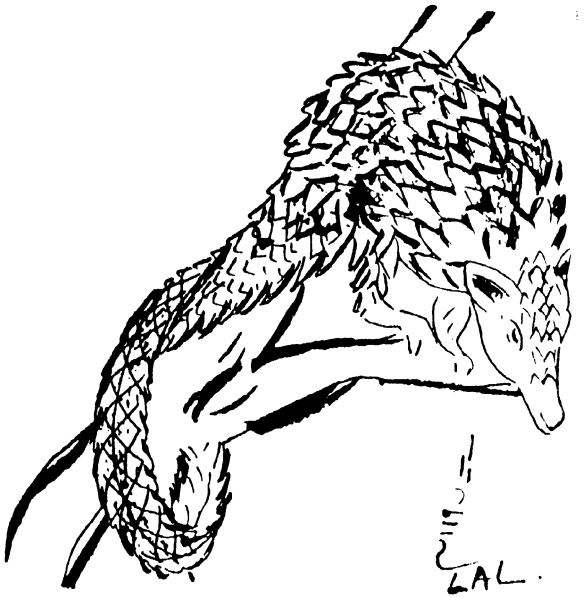

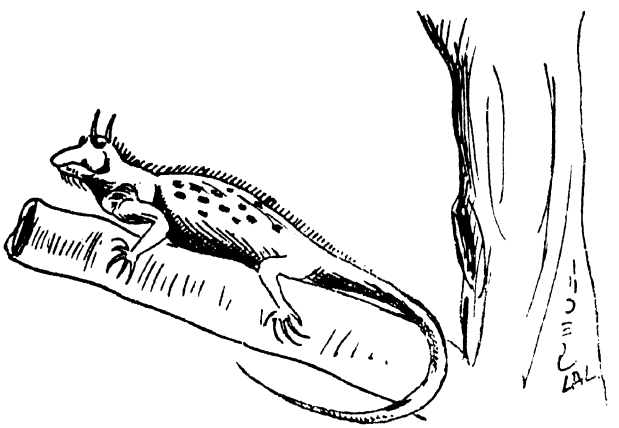

क्रीड़ा जिन्दगी भर नहीं भूली जाती। अगर सच पूछा जाय तो अफ्रीका संसार का एक बड़ा चिड़ियाघर है। फर्क केवल इतना हो है कि चिड़ियाघर इंसान

द्वारा बनाए जाते हैं जब कि अफ्रीका के इस कुदरती चिड़िया घर का निर्माण प्रकृति ने स्वयं अपने हाथों से किया है।

टबोरा नगर छोड़ने के करीब २०–२२ घंटों के बाद बोल्का नामक मुल्क आया। इस मुल्क में पेड़ बिल्कुल नहीं हैं। कहीं-कहीं छोटी-छोटी झाड़ियां नज़र आती हैं। यहां घूमने वाले हब्शियों के शरीर तांबे जैसे लाल थे और सिर पर बाल काफी लम्बे थे। इनके कानों की सीपियों के छेद बड़े-बड़े थे। यह क्युम लोगों की उपजाति है। इस मुल्क में पानी नहीं मिलता है। इसलिये ये लोग कन्धे पर तुम्बे रखकर पानी की खोज में मीलों चले जाते है। शिकार करना यहां के लोगों का प्रमुख धंधा है। धूपसे तक्लीफ न पहुँचे इसलिये ये लोग अपने शरीर पर लाल मिट्टी मलते हैं और मारे हुये जानवरों के बाल पेड़ के लासे से चिपकाते है। इस जाति में औरतों के जुड़वां बच्चे होना बहुत बुरा माना जाता है। जुड़वा बच्चों में एक बच्चा पापी और दूसरा पुण्यशील माना जाता है। पुण्यशील बच्चे को ढूँढ निकालने का तरीका बड़ा मज़ेदार है। जुड़वां बच्चा जनमने के सातवें दिन यह समारोह किया जाता है। इन लोगों के प्रत्येक दल में कुछ औरतें जादू, आदि का ध्यान रखती हैं। उन औरतों को इस मौके पर खास तौर पर बुलाया जाता है। जन्मे हुये दोनों बच्चों को लाकर ज़मीन पर

लिटाते हैं। उनके बीच में एक जुड़वां नारियल जो अपने यहां के जुड़वें केले की तरह होता है रखा जाता है। जिस बच्चे का हाथ उस नारियल पर पहले पड़ जाता है उसे पुण्यशील और बादमें जो बच्चा उसे छुएगा उसे पापी माना जाता है। पापी बच्चे का जलूस निकाला जाता है। बाद में किसी टीले पर गड्ढ़ा बनाकर उसे जिन्दा गाड़ देते है। सरकार की ओर से अब इसे कानून द्वारा बन्द कर दिया गया है।

"जिंदा बच्चे गाड़ देते हैं"—राजेन्द्र चीख पड़ा। कैसे यह लोग जंगली हैं। भला एक मां अपने बच्चे को इस प्रकार जिंदा जमीन में गाड़ सकती है।

बाबा ने शान्ति से कहा—मेरे बच्चे तुम्हें आश्चर्य जरूर हो रहा है परन्तु यह बात बिल्कुल सच है। सरकारी कानून बन जाने के बाद भी ये जंगली लोग केवल अपने कानून जानते है और उसका पालन बड़ी लड़ाई से करते है। हमारे देश में भी तो कुछ दिनों पहले तक इसी प्रकार के अन्य विश्वास प्रचलित थे। सती प्रथा के बारे में तो तुम लोगों ने पढ़ा होगा कि कैसे लार्ड वैंटिंग ने उसे बन्द किया। नर-बलि आदि का भी जिक्र तुमने सुना होगा। भारत जैसे सभ्य देश में जिसकी सभ्यता और संस्कृति

काफी पुरानी है और जिसे इस बात का गर्व है कि उसने संसार को ज्ञान दिया, ऐसी अन्धविश्वासी प्रथा का प्रचलित होना एक अजीब बात है। अफ्रीका तो सभ्यता के आदिम युग ही में है।

राजेन्द्र को विश्वास हो गया। परन्तु वह बड़ी देर तक एक नन्हें बच्चे को जमीन में गाड़ देने की बात सोचता रहा। प्रमोद और राकेश भी इसी चित्र को ध्यान में खींचे हुए थे।

संध्या की बेला आ गई थी। दिन भर इतनी जल्दी व्यतीत हो गया कि इन बच्चों को बिल्कुल पता ही नहीं चला। अब उन्हें घर जाने की जल्दी हो आई। दिन भर घर से गायब होने के लिए उनके माता-पिता भी काफी चिन्तित थे। जोगिया बाबा ने फिर सभा समाप्त करते हुए कहा—अच्छा अब तुम लोग घर जाओ, सारा दिन मेरा व्यर्थ में बर्बाद कर दिया। तुम्हारे माँ-बाप, तुम्हें देखते होंगे।

तीनों साथी उठकर चलने को तैयार हुए। चलते चलते प्रमोद बोला—अच्छा बाबा राम राम। कल फिर शाम को हम लोग आयेंगे।

राम राम, जाओ घर जाओ। बाबा ने उत्तर दे कोठरी का दरवाजा बन्द कर दिया।

मीनारों का शहर तथा कुदरती मेहराब

दूसरे दिन स्कूल से आ प्रमोद ने जल्दी-जल्दी खाना खाया। आज वह अपनी मां से बड़े प्यार से बोल रहा था। खाना खाने के बाद वह बोला—मां क्या किसी साधु सन्त को खिलाना पाप है।

मां उसका अर्थ नहीं समझ सकी, बोली—नहीं बेटा ! साधु लोगों को जरूर खिलाना चाहिये। ठीक है मां ! यही तो मैं भी कह रहा था परन्तु राजेन्द्र मेरी बात मानता ही नहीं। अच्छा मैं उसे तुम्हारे पास ले आऊंगा तुम उसे समझा देना।

आखिर बात क्या है ? क्यों इतनी भूमिका बांध रहा है ? आखिर तेरा मतलब क्या है ? माँ बोली।

मां ! बात कुछ नहीं। एक साधु तालाब के किनारे आया है। वह बहुत सारे शहर आदि घूमता हुआ इस वक्त अफ्रीका से लौटा है। मैंने सोचा कि उसे घर लेजाकर कुछ खाना आदि खिलायें, परन्तु राजेन्द्र कहता है यह ग़लत है।

मां बोली—तो मैं अब समझी। क्यों इतनी देर तू इतनी लम्बी चौड़ी बातें बना रहा था। चल लेजा, कुछ खाने को दे देना साधु को।

प्रमोद ने मां से एक पोटली में कुछ खाना लेकर बांधा और जल्दी से घर से बाहर निकलने को जूता पहनने लगा। तभी उसको मां ने आकर पूछा—यह साधु कैसा है? क्या पढ़ा लिखा है।

प्रमोद ने कहा—हां, मां उसे बड़ा ज्ञान है और बड़ी बड़ी बातें बतलाता है।

तो मैं भी उससे मिलने तेरे साथ एक दिन चलूंगी। उसे अपना हाथ दिखलाकर कुछ पूछूंगी।

नहीं मां वह हाथ वात नहीं देखता। तू तो बस सबसे अपने मतलब की बात पूछना चाहती है।

प्रमोद जल्दी जल्दी इतना कह घर से बाहर निकल गया। रास्ते में उसे राजेन्द्र और राकेश भी मिल गए। वे दोनों भी इसी तरकीब से अपनी मां से जोगिया बाबा के लिये खाना ले आये थे।

जोगिया बाबा आज फिर कुछ लिख रहे थे। वह अपनी अफ्रीका की यात्रा के सम्बन्ध में एक पुस्तक तैयार कर रहे थे। तीनों दिलेरों ने उनके चरण छू

प्रणाम किया और इसके बाद उनकी सेवा में अपनी अपनी पोटली आगे रखदी।

जोगिया बाबा बोले—अरे यह सब क्या है ? क्या लाए हो ? नहीं तुम लोग इसे ले जाओ, मैं कुछ भी स्वीकार नहीं करूँगा।

प्रमोद ने कहा—बाबा यह हमारी मां ने आपकी सेवा में कुछ खाने को भेजा है। कल हम देर में जब घर पर पहुँचे तो पूछने पर आपके बारे में हमें बताना ही पड़ा। मां आपके सम्बन्ध में जानकर बड़ी खुश हुई और आज यह कुछ खाने को भेजा है।

इतना कह उसने अपने दोनों साथियों की ओर देखा। दोनों साथी इशारा समझ बिल्कुल चुप रहे।

जोगिया बाबा बड़े सोच में पड़ गये। आखिर उन्हें बच्चों द्वारा लाई हुई सामग्री स्वीकार करनी ही पड़ी। सब चीजों को उन्होंने उठाकर एक ओर रख दिया और बोले—अच्छा बच्चो ! अब मैं तुम्हें अपनी यात्रा का आगे का हाल सुनाता हूं। पर आज कोई भी मुझे बीच में मत टोकना नहीं तो फिर मैं कुछ भूल जाऊँगा तो तुम्हें ही पछताना होगा।

तीनों ने एक स्वर से कहा, नहीं ! नहीं ! हम

बिल्कुल चुपचाप रहेंगे और बाबा ने आगे कहना शुरू किया।

मांझा शहर के करीब मुझे बड़े बड़े पत्थरों के मीनार नजर आए। इस तरह के मेंहराब भारत में हैदराबाद, (दक्षिण) में पाए जाते है। लेकिन यहां के मीनार घने जंगल में होने से बड़े मज़ेदार नज़र आते हैं। हमारी रेलगाड़ी बड़ी तेज़ी से जा रही थी। धीरे-धीरे उसकी रफ्तार कुछ कम होने लगी। गाड़ी के मुसाफिर बाहर झांककर कुछ देख रहे थे। एक मुसाफिर बोल उठा—अब थोड़ी ही देर में गेटवे आफ मांझा आयेगा थोड़ी देर में हमारी गाड़ी गेटवे आफ मांझा से गुज़ारी। उस वक्त रोमांच हो आया। यह गेटवे आफ मांझा, पहाड़ की दो बड़ी-बड़ी चट्टानें गिरकर पटरियों पर बनी कुदरती मेहराब है। इसके नीचे से गाड़ी जाते समय मेहराब के ऊपर के छोटे छोटे पत्थर हिलते, डुलते हैं। कमान की बगल में हरे पत्तों का एक ढेर नज़र आया। मालूम हुआ कि हब्शी लोग इसे देवता समझकर इस पर पत्ते चढ़ाते है। कमान से निकलते ही दूर घनी झाड़ियों से घिरी हुई सफेद और विशाल विक्टोरिया झील फैली है, और दूसरी ओर ऊँचा पहाड़। रेल इन दोनों के बीच से

बल खाती हुई मांभा स्टेशन में आ जाती है। मांभा व्यापार की मण्डी होने से स्टेशन अच्छी तरह से बना है। वहां दूसरे गांव को भेजने के लिये रखे हुये फलों के टोकरे और केलों के घौंद नज़र आए।

मांभा टंगानिका रेल का आखिरी स्टेशन है। हमारा सामान ब्रेक मे रखा था। कुली ने सामान निकालने में पूरे ढाई घण्टे लगाये।

समान निकालकर ट्रक में रखा गया। इर्द-गिर्द इतने मच्छर भिन भिना रहे थे कि मुंह खोलकर बोलना भी मुश्किल हो गया था।

घूमते घामते भाषा सीख गया

मैं जिस पार्टी के साथ गया था उस पार्टी ने सामान खरीदने का काम मुझे सौंपा था। मुझे थोड़ी सी स्वाहिली भाषा आती थी। इसके सिवाय मैं घूमता, घामता भी काफी था। जो कुछ मुझे स्वाहिली भाषा आती थी वह सब भटकने से ही मैं सीख पाया था। मैं अपने 'पीशी' (रसोईया) को स्वाहिली भाषा में ही हुक्म देता जैसे नटाका माजीया मोटो (गरम पानी चाहिये) आदि। अगर कोई मुझसे फर्राटे की स्वाहिली बोलने लगता तो उससे पोले-पोले कहकर धीरे बोलने के लिए कहना पड़ता।

पोले, पोले शब्द धीरे-धीरे के लिये सुनकर प्रमोद से न रहा गया वह अपनी बाबा से की गई प्रतिज्ञा को भूल गया और जैसे ही बाबा कुछ कहने के लिए अपना मुंह खोलने वाले थे कि वह बोल उठा—बाबा ! पोले, पोले।

राजेन्द्र और राकेश ज़ोर से हंस पड़े। बाबा भी हंसने लगे और बोले—अच्छा है तुम स्वाहिली भाषा

का एक शब्द तो सीख पाए।

बाबा ने आगे कहना शुरू किया—मांझा का मार्केट हमारे घर के सामने था। इसलिये सिर्फ आधे घण्टे में मैं बाजार से साग, सब्जी तथा अन्य जरूरी सामान ले आता था। मण्डी में टमाटर, मूली, मिर्च और बथुआ आदि सस्ता मिलता था। दूसरी तरकारी मंहगी मिलती थी। किराने की दुकान में सब माल मिलता था, लेकिन चावल बड़े खराब होते थे और एक रुपया सेर मिलते थे। कभी कभी तो अच्छे चावल पाना बड़ा मुश्किल हो जाता था। मुझे रोज मिर्च खरीदता हुआ देखकर हमारे अफ्रीकी नौकरों को बड़ा अचंभा होता क्योंकि अफ्रीकी हब्शी मिर्च बिल्कुल नहीं खाते।

शाम को मै विक्टोरिया झील के किनारे टहलने गया। झील को मीठे पानी का सागर कहना चाहिए। पठार के ऊपर बनी हुई इस झील का घेरा आठ सौ मील है। इस झील के किनारे कई एक शहर बसे हैं। तांगानिका, युगांडा और केनिना इन तीनों उपनिवेशों से इस झील की सीमा बंधी है। झील में बड़े बड़े जहाज चलते हैं।

झील में मगर का बड़ा आतंक फैला है। मै

किनारे से बड़ी दूर खड़ा था। पास जाने पर मगर, आदमी पर झपटते हैं। आदमी पानी में पैर नहीं रख सकता और जानवर पानी नहीं पी सकते। जिस घाट से यात्री जहाज पर उतरते, चढ़ते हैं वहां से भी मगर अक्सर आदमी को झपट कर पकड़ ले जाते हैं। सरोवर के मगर बड़े धूर्त होते हैं। कोई जानवर उनके आतंक से पानी पीने अंदर नहीं जाता इसलिये वे बाहर किनारे पर आकर घास में छिपकर बैठते हैं। वहीं चुपके से बैठे हुये वह प्राणियों पर झपटते हैं। सरकार ने मगरों को नष्ट करने की बड़ी कोशिश की, लेकिन उनकी तादाद इतनी बड़ी है कि वह सम्पूर्ण नष्ट न हो सके। मगर एक खास किस्म के नेवले से बहुत

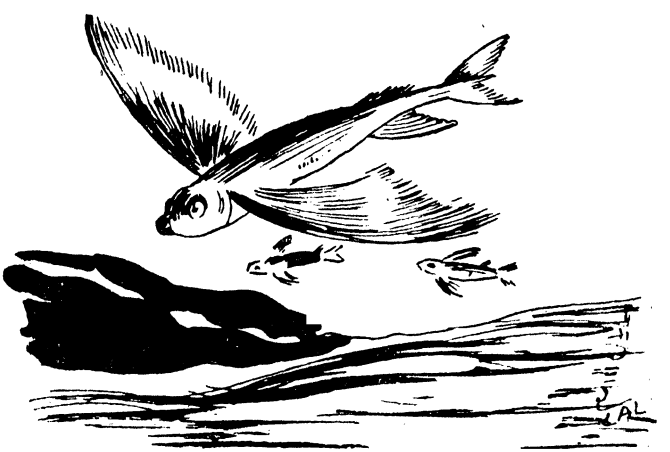

डरते हैं। यह नेवला आते ही सारे मगर फौरन पानी में भाग जाते हैं। नेवले के शरीर से आने वाली खास किस्म की गन्ध को मगर बर्दास्त नहीं कर सकते।

झील के आस पास मुझे बड़े विचित्र प्रकार के पक्षी नजर आए उनमें लम्बी पूंछ वाले कुछ नये पक्षी थे। इन पक्षियों की आवाज भी निराली थी। मुर्गावी, बत्तख, और कौए काफी बड़े बड़े आकार के होते हैं। कौए के शरीर पर सफेद धारियां भी होती है। यह कौए हिरनों के झुंड पर हमला करके किसी हिरन की आंख फोड़ देते हैं और बाद में उसके शरीर पर चोंचें मार मार कर उसे खा जाते हैं।

—: ० :—

मिश्नरी स्कूल और हब्शी बच्चे

बाबा ने तीनों बच्चों की ओर हाथ हिलाकर कहा—जैसे अपने भारत में जगह जगह ईसाई मिशनरी फैले हुये हैं और स्कूल आदि खोल रक्खे हैं वैसे ही ईसाई धर्म के प्रचार के लिए अफ्रीका में भी उन्होंने हस्पताल तथा स्कूल आदि खोले हैं।

मैं झील के किनारे टहल कर लौटते समय एक ईसाई मिशनरी स्कूल देखने गया। स्कूल के प्रधान ने मेरा हंसकर स्वागत किया। उसने मुझे स्कूल दिखाया। इस स्कूल में करीब सौ हब्शी बच्चे तरह, तरह के धन्धों की शिक्षा पा रहे थे। बच्चों को खाना, कपड़ा और शिक्षा के साधन मुफ्त में दिये जाते हैं। अपने धर्म के प्रसार के लिए अपने देश से इतनी दूर बसे हुए इन मिशनरियों के प्रति मैं आदर से नतमस्तक हो गया। धन्य हैं—वे लोग।

इतना कह बाबा थोड़ी देर रुक कर बोले—हम भारतवासी अपने धर्म की बड़ी बड़ाई करते हैं। धर्म

के नाम पर यहाँ बड़े-बड़े झगड़े होते हैं परन्तु कितने हिन्दुस्तानी अपने धर्म के प्रचार व प्रसार के लिये दूर देशों में गये हैं ? शायद उनकी संख्या अंगुली पर गिनी जा सकती है। मेरे बहादुर दिलेर साथियों ! मैं तुमसे यह आशा करता हूँ कि बड़े होने पर तुम लोग भी अपने देश का नाम रोशन करने के लिये इन्हीं मिशनरियों की तरह दूर दूर देशों में जाओगे।

तीनों बहादुर दिलेर साथियों ने बाबा को विश्वास दिलाया तथा उनकी कही बात पर आचरण करने का वचन दिया।

बाबा ने सबको शाबाशी दी और आगे बोले—स्कूल के हब्शी विद्यार्थी बड़े अनुशासन बद्ध थे। स्कूल के अहाते में इतनी सफाई थी कि वहाँ हमें कागज का एक छोटा टुकड़ा या पत्ता तक नहीं मिला।

स्कूल से लौटकर रास्ते में मुझे एक बेजोड़ नज़ारा देखने को मिला। तालाब के किनारे एक बड़े पत्थर पर दूसरा एक बड़ा पत्थर एक छोटे से सहारे पर खड़ा हुआ है। ज़रा सी हवा चलते ही ऊपर का पत्थर हिलने-डुलने लगता है, परन्तु गिरता नहीं है। प्रकृति का चमत्कार मनुष्य के मन को मुग्ध कर लेता

है। इस प्राकृतिक चमत्कार को देखने के लिए दूर-दूर से बहुत से लोग प्रतिदिन आते हैं। हम लोग आधे पौने घण्टे तक अलग अलग स्थानों से उस पत्थर को देखते रहे।

अफ़रीका के चोरों की करामात

मैं भ्रमण आदि से रात को अपने डेरे पर लौटा। लौटने पर पता चला कि शाम को किसी चोर ने चोरी करने की कोशिश की थी परन्तु मेरे आदमी के देख लेने पर भाग गया। चोरी की घटना के सम्बन्ध में काफी देर तक मेरी अपने अफ़्रीकी नौकर से बात होती रही और अफ़्रीकी चोरों की बड़ी दिलचस्प बातें मेरे सामने आईं।

अफ़्रीका के चोर नाना प्रकार की तरकीबें चोरी के विषय में काम में लाते हैं। इसमें हुक्कि नाम की तरकीब विशेष प्रचलित है। चोरों के पास एक लम्बा बांस होता है। उस बाँस के सिरे पर एक अंकड़ी लगी रहती है। इस अंकड़ी की सहायता से चोर खूंटी पर रखे हुये कपड़े उठाकर खिड़की के पास ले आते हैं और जेब में रखी हुई चीज़ों को निकालकर कोट को फिर खूंटी पर रख देते हैं। इस प्रकार की चोरी के कारण कई बार झगड़े हो जाते हैं क्योंकि इस प्रकार से यह समझना बड़ा मुश्किल हो जाता है कि जेब में

रखे हुये पैसे या चीजें किसने चुराई। घर के लोग एक दूसरे पर शक करने लग जाते हैं।

दूसरे प्रकार की चोरी जो अफ्रीका में प्रचलित है वह इस प्रकार है कि लोगों को बेहोश बनाकर चोरी करना। बिना मारपीट किए ही एक प्रकार की बनस्पती के धुएँ से वे लोग पहले घर वालों को बेहोश बना देते हैं और फिर खिड़की के सींखचे तोड़कर अन्दर जा चोरी कर लेते हैं। अफ्रीका में चोरी के ख्याल से सभी खिड़कियों में लोहे की मोटी मोटी जालियाँ लगी होती हैं। इन जालियों से दो फायदे होते हैं एक तो चोरी का खतरा मिट जाता है और दूसरे मच्छर भी अन्दर नहीं आ सकते।

हमारे तीनों दिलेर साथियों को हुविंग नामक चालाकी से भरी हुई चोरी के ढंग पर बड़ा अचरज हुआ। राकेश बोला-मैं तो हब्शी लोगों को बिल्कुल बेवकूफ और जंगली समझता था, पर चोरी की उनकी इस तरकीब को सुनकर मुझे अपना विचार बदलना पड़ेगा।

हब्शी को बेवकूफ कहना सरासर गल्ती है। बाबा कहने लगे-मुझे एक पादरी ने बताया था कि इनके दिमाग बड़े अच्छे और तेज होते हैं। एक बार कोई

भी काम बतला देने पर वह जीवन भर कभी उसे नहीं भूलते हैं।

प्रमोद बोला—बाबा, आपके कहने के मुताबिक तो यह हब्शी शरीर और दिमाग दोनों में काफी बलवान होते हैं फिर वे इतने पिछड़े हुये कैसे है।

यह एक कुदरत का चमत्कार ही समझो। प्रत्येक देश के निवासी अपनी आवश्यकता और परिस्थिति के वश ही उन्नति करते है। हमारा देश सभ्यता और संस्कृति में इतना उन्नतिशील होता हुआ भी काफी दिन गुलाम रहा। इसके कई कारण हो सकते हैं। पर अब अफ्रीका जाग रहा है। हमारे देश की तरह वह देश भी संसार में आदर तथा इज्जत पायेगा। बाबा ने एक साथ ही इतना बड़ा वाक्य बोलकर प्रमोद को जवाब दिया।

राजेन्द्र भी कुछ बोलना चाहता था पर बाबा ने अपनी कहानी आगे शुरू करदी।

अफ्रीका के मांभा शहर में मैंने अपने जादू का एक नया खेल अफ्रीकी जनता को दिखलाया। इस खेल में मैने अपने आपको जमीन में गाढ़ दिया।

तीनों साथी हक्के, बक्के से बाबा की ओर देखने लगे।

रात के करीब सात बजे मैंने एक खुले मैदान में अपने इस खेल को दिखाया। मेरा खेल देखने को काफी लोग आए थे। चार नामी डाक्टरों ने आकर पहिले मेरी नब्ज देखी और फिर पास में बनाए हुए गढे में गाढ़ देने के लिये मुझे नीचे उतारा। मैं करीब आधे घण्टे तक गड्ढ़े में रहा। मैं सकुशल गड्ढे से जीता जागता बाहर आया। लोगों ने मुझे सकुशल देख खूब तालियाँ बजायीं और मैंने काफी धन इनाम में पाया।

माँझा छोड़ने से पहिले मैं एक मित्र के साथ शमशान देखने गया। यह गांव के बाहर है। उसके आसपास का वातावरण बड़ा सुन्दर है। उस शमशान के चारों ओर फूल पौधों का बागीचा है। लाश बिजली द्वारा जलाई जातो है। लाश के जलने पर मेज़ के निचले हिस्से में राख आपही-आप इकट्ठा हो जाने की सुविधा की गया है। शहर से इतनी दूर लाश को लाने के लिए एक खास गाड़ी बनी है।

हिन्दुओं के शमशान के पास ही झील के किनारे ईसाईयों का कब्रिस्तान है। यहां चारों ओर क्रास ही क्रास नज़र आए। इस कब्रिस्तान में बड़ी चीटियां नज़र आईं। यह चीटियां मुंह से पत्ते पकड़कर चल

रही थीं। दूर से देखने पर ऐसा मालूम पड़ता जैसे वह छाता लेकर चल रही थीं।

शमशान का वर्णन सुन हमारे तीन दिलेर काफी डर गए। रात भी इस वक्त काफी हो आई थी। वह अब इस दिलचस्प किस्से को कल के लिए रोककर घर जाना चाहते थे। बाहर काफी अंधेरा था और सांय-साँय की आवाजें आ रहीं थी।

बाबा तीनों साथियों की हालत भांप गए। उन लोगों से वह बोले—अच्छा तो कल मैं तुम लोगों को पानी पर तैरने वाले टापू का हाल सुनाऊंगा। इस समय काफी देर हो गई है। अब घर जाओ। तीनों साथी उठ खड़े हुए पर बाहर अकेले जाने की उनकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। शमशान के किस्से से वे और भी डर गये थे। उन लोगों को बाहर जाने से हिचकता हुआ देख बाबा ने अपनी टार्च उठाली और तीनों को सड़क तक पहुँचा आए।

---

*

तैरने वाला ग्रंथ

जोगिया बाबा बैठे चुल्हा फूंक रहे थे। मोटी-मोटी रोटी वह तवे पर डालते और फिर सिक जाने पर अंगारे पर उसे सेंकते। इस वक्त करीब पांच बजे थे। जाड़े की शाम बड़ी जल्द ही हो जाती है और अंधेरा छाने लगता है। बाबा अंधेरा हो जाने से पहले ही खा-पीकर फारिग हो जाना चाहते थे। वह जानते थे कि अभी वे तीन शैतान बच्चों के बीच में पड़ जायेंगे और वे लोग रात को ९ बजे तक पीछा न छोड़ेंगे।

लेकिन बाबा के मन की बात मन में ही रह गई। तीनों दिलेर आ धमके। आज भी उनके साथ बाबा के लिए खाना बंधा था। बाबा को खाना पकाते देख प्रमोद बोला—बाबा यह क्या? खाना तो हम लोग घर से लाए हैं।

बाबा ने हंस कर कहा—अरे रोज़ रोज़ भोजन क्यों लाते हो। क्या कहानी सुनने का मेहनताना दे रहे हो। इतना कह वह ज़ोर से खिलखिला पड़े।

तीनों बच्चे कुछ उदास से हो अपने में सिमट गए। वे एक ओर बिना बोले ही चूल्हे पर दृष्टि लगाए खड़े रहे।

बाबा बोले—खैर, आज तो मैंने खाना बना ही लिया है। मुझे क्या पता था कि तुम मेरे लिए खाना ला रहे हो। कल से मैं खाना नहीं पकाऊंगा। चलो अन्दर बैठो मैं अभी आता हूँ।

तीनों बालक अन्दर कोठरी में बैठ गये। कोठरी में बाबा ने अपने सब समान को कायदे से लगा रखा था। सामान थोड़ा ही था पर सब आवश्यक और साफ सुथरा था।

राकेश ने कहा—आज तो बाबा हमें पानी पर तैरने वाले टापू की कहानी सुनायेंगे। पता नहीं पानी पर टापू कैसे तैरता होगा?

प्रमोद ने कहा—अरे तैरने वाले टापू कढ़ाई में पड़ी कचौड़ी की तरह तैरते होंगे, और क्या! तू तो निरा बुद्धू ही है। इतना भी नहीं समझता।

प्रमोद की इस उपमा से उसके दोनों अन्य साथियों का बोलना बंद हो गया। दोनों में से कोई भी अपने को बुद्धू नहीं कहलवाना चाहता था। फिर

भी राकेश ने झेंप मिटाते हुये कहा -अच्छा, अच्छा तू बड़ा अकलमन्द ही सही । अभी अभी बाबा के आते ही सारा भेद उन टापुओं का पता चल जायेगा ।

प्रमोद कुछ आगे और कहना चाहता था । परन्तु राजेन्द्र ने उसे अंगुली के इशारे से चुप कर दिया । बाबा अन्दर आ रहे थे ।

अन्दर आकर बाबा ने कहा—अच्छा तो प्रमोद तैरने वाले टापू सचमुच कढ़ाई में पड़ी कचौड़ी से पानी में तैरते हैं । सुनो मैं तुम्हें सारा किस्सा सुनाता हूँ ।

मांभा से बुकोबा जाने के लिए हम लोग तैयार हुए । हम इस शहर में बहुत परिचित हो गये थे । पन्द्रह दिन के यहां रहने से हमें मांभा शहर से लगाव हो गया था । जिस दिन हम इस शहर से विदा हो रहे थे लोगों के दिये फलों और मिठाईयों के टोकरों से हमारा सामान काफी ज्यादा हो गया था और जहाज विक्टोरिया झील से गुजर रहा था । इस झील से गुजरनेवाला जहाज बिल्कुल नहीं डोलता इसलिए मुसाफिर हमेशा खुश रहता है । हमारे पास के पलंग पर एक हब्शी वकील सोया था । वह बड़ा बातूनी था । उसने इस झील के बारे में बड़ी मज़ेदार बात

बताई । उसने कहा यह झील दुनिया की सबसे बड़ी झीलों में दूसरे नम्बर की है । पठार पर बनी हुई इतनी बड़ी झील दुनिया में और कोई नहीं है । इस झील में तैरने वाले टापू हैं । ये टापू हवा के झोंकों के साथ इधर, उधर बहते जाते हैं । कभी कभी यह टापू जहाजों के मार्ग में आ जाते हैं । ऐसे समय उन्हें दूसरे छोटे जहाजों से दूर खींच ले जाया जाता है । बाद में बड़े जहाजों के लिये रास्ता खुल जाता है । तैरने वाले टापू पर आदमी नहीं रहते । वहां मच्छर, टिड्डी और मगरों की बस्ती होती है । ऐसे टापू जिस गांव के पास जाते हैं वहां के लोगों का बड़ा नुकसान होता है । टापू का टिड्डीदल फसलों पर हमला करता है । मच्छर आदमी को काटते हैं । और मगर जानवरों को पानी में खींच ले जाते हैं । ऐसा टापू गांव के पास आ जाने पर श्रद्धालू लोग ईश्वर की प्रार्थना करने लगते हैं । सरकार की ओर से उस पर कीटाणु-नाशक द्रव्य छिड़के जाते है और गांव के पास से दूर हटाया जाता है ।

उसने आगे बताया कि बहुत पहले तूफान की वजह से झील के किनारे के अनेक पेड़ पानी में गिर पड़े । पेड़ों के साथ बेलें भी पानी में गयीं । बेलों की वजह

से पेड़ एक दूसरे से फंस गये। तूफान से उस पर मिट्टी आ पड़ी और टापू तैयार हुए। इस तरह के टापू छोटे-छोटे होते हैं।

प्रमोद से जो बड़ी देर से कुछ पूछना चाहता था, न रहा गया। बोला—बाबा एक बात पूछूं ? क्या आपने ऐसे तैरते हुये टापू देखे हैं ?

बाबा बोले–देखो प्रमोद ! मैं खुद इसे बताने जा रहा था पर तुमसे रुका न गया बोलने के बगैर। खैर सुनो—मुझे सफर में तैरने वाले टापू दिखाई नहीं दिये लेकिन उनकी सच्चाई के बारे में अनेक बातें सुनीं। हब्शी माँ अपने बच्चों को हिम्मती, बहादुरों, की कहानियां सुनाते समय कहती हैं–वह बहादुर तैरते हुए टापू के सहारे दूर-दूर चला गया और उसे वहां एक बड़ी मछली मिली।

हब्शियों का रंग काला क्यों ?

अच्छा मेरे दिलेर छोटे साथियो एक और मज़ेदार बात है जो वकील सहाय ने मुझे सुनाई, वह मैं तुम लोगों को सुनाता हूँ। बड़ी दिलचस्प कहानी है।

हब्शी लोग काले क्यों होते हैं, इस सम्बन्ध में देहातों में प्रचलित एक कहानी है। वह इस प्रकार है। पहले-पहले भगवान ने अपने भक्तों की परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने यह जानने के लिये कि कौन मुझे कितना प्यार करता है संसार के भिन्न भागों से तीन आदमियों को चुना। तेल भरी कढ़ाई गर्म करके उसमें उन्होंने पहले आदमी को छोड़ दिया। थोड़े ही समय में वह चिल्लाते हुए बाहर निकल आया। बाद में इसी तरह दूसरे आदमी की भी परीक्षा भगवान ने ली। कुछ देर रुकने के बाद वह दूसरा आदमी भी बाहर आया अब तीसरे आदमी का नम्बर आया। उसे भी कढ़ाई में फेंक कर वह उसके बाहर आने का इन्तज़ार करने लगे। बहुत देर तक वह आदमी बाहर नही आया। आखिर उसका इन्तजार करते करते भगवान

उक्ता गए और उन्होंने अपने हाथों से बड़े प्यार के साथ उसे बाहर निकाला और कहा—तुम्हीं मेरे सच्चे प्यारे हो। इस तीसरे आदमी का शरीर बहुत देर तक उबलते हुए तेल में रहने से जलकर काला पड़ गया। बाद में इसी आदमी की सन्तान से हब्शी जाति के लोग पैदा हुये हैं। कढ़ाई में डाले गये अन्य दोनों लोगों की सन्तान से योरोप और एशिया के लोग पैदा हुये हैं।

वकील की कहानी बड़ी दिलचस्प है। यह हमारे यहां प्रचलित लोक कथा जैसी है। कुछ भी हो इस कहानी से यह तो पता चलता ही है कि हब्शी लोगों में अपने काले-काले रंग के बारे में कुछ हीन भाव की भावना है। उसे दूर करने के लिए ही यह कहानी गढ़ी गई है। तुम लोग इसे सच तो नहीं समझ गये।

राकेश ने फौरन जवाब दिया नहीं। मैं तो इसे बिल्कुल गढ़ी हुई कहानी मानता हूँ। हां शायद प्रमोद इसे सच मान गया हो। वह ऐसी कहानियों पर विश्वास कर लेता है।

प्रमोद चिढ़कर बोला—हां! हां बड़ा चालाक है। तू दूसरों को बुद्ध ही समझता है। मैं इसे क्यों सच

समझूंगा। तेरे जैसा गधा थोड़े ही हूँ कि रामलीला में रावण के दस सिर बने देखकर तू सच मान गया था।

राजेन्द्र बोला—अब कहो राकेश, दो न इसका जवाब। बड़ा चढ़कर बोल रहा था। प्रमोद ने ही तो तुझे बतलाया था कि रावण जितनी बुद्धि दस आदमियों में मिलाकर होती है उतनी उसमें अकेले ही थी। इसीलिए उसे दस सिर वाला कहते हैं और बाद में हम लोग गल्त समझ कर उसके दस सिर बनाकर दशहरा के दिन खड़ा करते हैं।

रावण का प्रसंग बीच में आ जाने से बाबा को कुछ याद आ गया। वह बोले—अच्छा तुम लोगों के आपस के झगड़े से मुझे एक बात और याद आ गई। अफ्रीका के हब्शियों के सम्बन्ध में बतलाते हुए रावण का जिक्र आ जाने से तुम लोगों को एक बात और समझ लेनी चाहिये। भौगोलिक विज्ञान के जानने वालों ने यह पता लगाया है कि किसी जमाने में अफ्रीका महाद्वीप हमारे भारत के पास में लंका टापू तक फैला हुआ था। हो सकता है रावण उस युग में इसी विशाल महाद्वीप का सम्राट रहा हो। उसकी आकृति आदि भी हब्शी लोगों से मिलती है पर यह

अभी एक कल्पना ही है। तुम लोग इसे सच न मान लेना। मैंने तो इसे सिर्फ एक तुम्हारी जानकारी बढ़ाने के लिए कह दिया है। अच्छा तो अब तुम लोग अपने झगड़े खत्म कर आगे मेरी यात्रा का हाल सुनो।

× × ×

करीब छः बजे प्रातः बुकोला शहर पहुँचा। इस शहर से अफ्रीका के घने जंगल शुरु हो जाते है। मुझे

इस जंगल को देखने का बड़ा चाव था। मैं सोच रहा था जिन जंगली जानवरों के वर्णन हम लोग कहानी उपन्यासों में पढ़ते थे और जिन्हें मैं सिनेमा में देखता

या वे ही जंगली जानवर अब मुझे अपनी आंखों से देखने को मिलेंगे।

मैंने अफ्रीका के इस जंगल को देखने से पहले एक बार पास के एक पहाड़ी पर कुछ लोगों के साथ पिकनिक के लिये जाने का निश्चय किया। इस सैर में पच्चीस, तीस लोग शामिल थे। इस पहाड़ी पर झाड़ी बिल्कुल नहीं थी। इसीलिए जंगली जानवरों या दूसरे प्राणियों का डर नहीं था। पहाड़ी पर चढ़ते समय हमें एक वनास्पति नज़र आई। इस वनास्पति को स्टिंकिंग-ट्री-या बिच्छुओं का पेड़ कहते हैं। इस पेड़ का पता शरीर को छूते ही बिच्छुओं के डंक सी पीड़ा होने लगती है। लेकिन प्रकृति ने उसका इलाज भी रखा है। इसी पेड़ के पास गोल पत्तों वाली वनास्पति पाई जाती है। उसका रस जलन होने वाली जगह लगाते ही जलन मिट जाती है। इस पेड़ को देखने के बाद मुझे एक बात याद आ गई। मैंने अपने एक अफ्रीकी साथी से पूछा—क्या यह सच है कि अफ्रीका में आदमी को खाने वाले पेड़ हैं?

उन्होंने उत्तर दिया-इस तरह के सिर्फ पेड़ ही नहीं बल्कि बेलें भी हैं, पिछले महायुद्ध में कई सिपाही इन खोफनाक पेड़ों के कारण मारे गये। सरकार ने

बहुतेरे पेड़ कटवा दिए हैं। केवल अब कुछ पेड़ मुसाफिरों को दिखलाने के लिए खास कर रखे हैं। ऐसे पेड़ के चारों ओर बाड़ा लगा देते हैं और उसके पास पहरा देने के लिये एक हब्शी को बैठाया जाता है। पेड़ के आसपास एक के बीच दूसरा इस तरह के कुछ गोलचक्कर से बनाये जाते हैं। बाहर के दायरे में आदमी के आते ही पेड़ के पत्ते हिलने लगते हैं। अन्दर के दायरे में आदमी के आते ही पेड़ के पत्ते टहनियों के साथ आदमी को ऊपर को उठा लेते हैं। पेड़ में ऐसी ताकत है या नहीं इस बात को आसानी से आंका जा सकता है। आसपास हब्शी देहाती मारे हुए पंछी बेचने के लिए बैठे होते हैं। एक मरे हुए पंछी को पेड़ की ओर फेंकते ही पेड़ क्रिकेट की गेंद की तरह उस पंछी को लुपक लेते हैं। यह पेड़ इतने खतरनाक हैं कि इसके नीचे से हाथी भी जाते हुए डरते हैं। इस पेड़ के ऊपर पंछी भी नहीं बैठते। इस खतरनाक पेड़ की जो बेलें भी जमीन पर फैली रहती हैं वे जमीन पर चलने वाले कीड़ों-चींटियों को चुग लेती हैं। इस तरह की बेलें और कुछ पेड़ कांगो की घाटी में और भूमध्य रेखा के पठार के मुल्क में पाये जाते हैं।

रोज होने वाली बरसात

बुकोबा, की पहाड़ी पर मैं अपने साथियों के साथ तीन, चार, घंटे रहा। वक्त बड़े मजे में बीता। चार बजे हम घर लौटे, क्योंकि भूमध्य रेखा के मुल्क में रोज शाम को घंटे, आधे घंटे, तक बरसात होती है। यह वर्षा बड़ी मजेदार होती है। सुबह, आकाश में एक भी बादल नज़र नहीं आता। दोपहर के २-३ बजे के बीच बादल उमड़ने लगते हैं और चार बजे के करीब थोड़ी बरसात होती है। यह बरसात भी सावन-भादों की रिमझिम की तरह होती है। आँधी या तूफान कभी नहीं होते। बरसात हो जाने पर वातावरण बड़ा रमणीय हो जाता है। शरीर को जलाने वाली धूप की गर्मी बरसात के कारण कम हो जाती है। नहाये हुए पेड़ों पर डूबते हुए सूरज की कोमल किरणें पड़ जाती हैं। उस समय की प्रकृति-शोभा अवर्णनीय है। इस रमणीय वातावरण में बरसात के समय पत्तों की ओट में छिपे हुए पंछी भी चहचहाते हुए उठने लगते हैं।

मैंने सोचा था कि जब बुकोबा में हर रोज वर्षा होती है तब तो वहाँ मच्छर भी बहुत होंगे। लेकिन

ताज्जुब की बात तो यह थी कि मच्छरदानी लगाने की जरूरत नहीं थी। इस गांव में इलायची के पेड़ बहुत हैं। इस पेड़ की गंध से मच्छर दूर भाग जाते हैं।

बुकोबा में दरियाई घोड़े बड़ी संख्या में हैं। अफ्रीकी लोग उसे 'कबोको' कहते हैं। यह घोड़े इस बुकोबा शहर के यात्रियों को देखने के लिए एक बड़ी चीज है। पानी से यह रात को बाहर आते हैं। उन्हें देखने के लिए दूर फासले पर मोटर में बैठे रहना चाहिये। शोर नहीं करना चाहिये और न ही बैटरी या टार्च जलानी चाहिये। पानी से बाहर आकर दरियाई घोड़े खूब खेलते हैं और मुंह से फुर-फुर की अवाज़ करते हैं।

फुर-फुर की आवाज़ को सुनकर प्रमोद ने भी मुंह से फुर-फुर किया। बाबा ने ज़रा गुस्से से उसकी ओर देखा। अपनी गल्ती को टालने के लिये उसने कहा-बाबा, क्या आपने इस तरह मोटर में बैठ कर दरयाई घोड़े को देखा।

बाबा बोले—प्रमोद तुम बड़े चालाक हो। अपनी गल्ती को किस तरह टाल रहे हो। अच्छा, मैं कहता हूँ कि बड़े होने पर तुम बड़े चतुर बनोगे। खैर, मैंने

दरियाई घोड़े को अपनी आंखों से नहीं देखा। काफी प्रतीक्षा करने के बाद भी वह पानी से बाहर नहीं आये, यह मेरा दुर्भाग्य ही था।

× × ×

अच्छा ! मैं अब तुम्हें अफ्रीका के खरगोशों के सम्बन्ध में भी कुछ बता दूँ। बुकोबा से रवाना होने

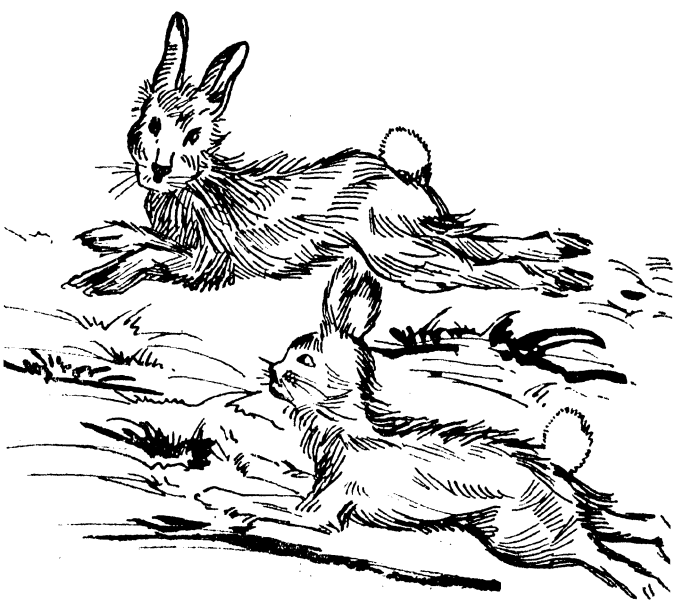

के दिन एक भारतीय सज्जन की ओर से हमें चाय का बुलावा आया। इन सज्जन को खरगोश पालने का

बड़ा शौक था। उन्होंने अपने घरों में तरह-तरह के खरगोश पाल रक्खे थे। खरगोशों के रहने तथा सोने के लिए सभी आधुनिक सुविधायें थीं। बहुतेरे खरगोश उन्होंने खुले छोड़ रक्खे थे और वह उछलते कूदते इधर उधर जा रहे थे। खरगोश के सम्बन्ध में मुझे बताया गया कि खरगोश बड़ा होशियार जानवर होता है। वह अपना घर छोड़ कर कभी दूसरे के घर में नहीं घुसता। मार-पीट करना तो उसके ख्याल में भी नहीं आता। खरगोश अपने बच्चों को सताने वाले जानवरों से बड़े ढंग के साथ बदला लेता है। अफ्रीका के हब्शी यह मानते हैं कि गुस्सावर आदमी अगर अपने पैर खरगोश के पास रखे तो उसका गुस्सा चला जाता है। खरगोश की शान्त प्रकृति के कारण ही यह ख्याल हुआ होगा।

अफ्रीका में खरगोश कई नस्ल के होते हैं। एक पीले नस्ल का खरगोश होता है। ये खरगोश घनी झाड़ियों में रहते हैं। इसीलिए शायद ही दिखाई देते हैं। ये खरगोश मामूली खरगोशों से ऊंचाई में करीब डेढ़ गुना बड़े होते हैं।

राकेश से चुप न रहा गया। उसके मन में पीले खरगोश देखने की बड़ी इच्छा हुई।

अरे क्या मैं सारा अफ्रीका भारत में ढो ले आता । मैं ठहरा घुमक्कड़ आदमी, कहाँ-कहां लिए फिरता । फिर भी अगर तुम देखना चाहो तो चिड़िया घर में देख आ सकते हो, लेकिन तुम्हारे शहर में तो कोई चिड़िया घर नहीं है । अच्छा तो बड़े होकर संसार के असली चिड़िया घर अफ्रीका में ही इसे देख आना, बाबा बोले । अब आगे सुनो । बुकोबा से हम मसाका के लिए रवाना हुए । चारों ओर एक सा नज़ारा था । जहां देखो ऊंची-ऊंची घास । इस इलाके में शेर बहुत होते हैं । यह शेर आदमी व सवारियों को नहीं सताते । कभी-कभी सात आठ सिंह सड़क पर मोटर के सामने आराम से बैठे होते हैं । सड़क पर शेरों को देखते ही मुसाफिर आगे जाने लगें तो शेर मोटर पर हमला करते हैं । कभी-कभी इन शेरों के कारण मुसाफिरों को दो-दो घंटे रुकना पड़ता है ।

सिंह अपनी ओर से कभी आदमियों को नहीं सताते । इसका कारण यह है कि वे अपनी रुची का मांस भरपूर पाते हैं । सिंह को जेवरों का मांस बड़ा अच्छा लगता है । जेवरा एक जंगली प्राणी है । उसे पालतू बनाना बड़ा मुश्किल है । उसके खुरों की चोट बड़ी जबरदस्त होती है । सिंह जब उन पर हमला

करता है। तो सारा झुंड एक साथ सिंह पर हमला करता है और अपने साथियों के प्राण बचाता है।

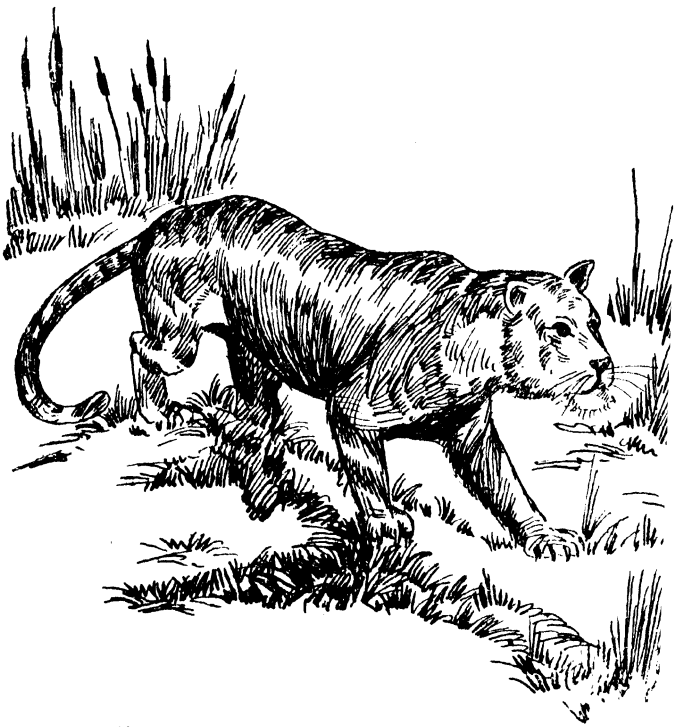

सिंह बड़ी तरकीब से जेबरा को मारते हैं। अफ्रीका में खारी मिट्टी के कुछ मैदान हैं। इन मैदानों के पत्थरों को चाटना जेबरों को बहुत अच्छा लगता है। योरोप के साहसी शिकारियों ने इन मैदान के आस-पास पेड़ों पर अपने घर बांध रक्खे हैं। इन घरों में

बैठने पर वह दृश्य नजर आता है। जेवरों के झुंड के झुंड खारी मिट्टी चाटने के लिये आ जाते हैं। कुछ शेर पास के जंगल में ताक में बैठे रहते हैं। जब जेवरे मिट्टी चाटने में तल्लीन हो जाते हैं। तो शेर जोर जोर से दहाड़ते हैं। सारा जंगल कांप उठता है। जेवरे इस दहाड़ को सुनकर भागने लगते है। झुंड से कोई जेवरा अलग होते ही उस पर सारे सिंह एक साथ आक्रमण करते हैं। मैदानों में जेवरा को चरने में मशगूल देखकर भी सिंह उन पर हमला करके उन्हें पकड़ते हैं।

अफ्रीका में घास बहुत होती है। यह घास का मैदान ही सिंहों के रहने का ठिकाना है। उसे पार करने पर मसाका शहर आ जाता है। यह शहर बहुत छोटा है फिर भी लुहार और बढ़ियों की बहुत सी दुकानें यहां नजर आती हैं। इन कामों को करने वाले अधिकतर हिन्दुस्तानी लोग है। अफ्रीका के देहातों में जाकर उन लोगो ने सब तरह के धंधों को जमाया है। इन लोगों में गुजराती, सिख और मुसलमान भारी संख्या में हैं।

बाबा की कहानी शेरों से एकाएक मसाका शहर के वर्णन पर आ जाने से, तीनों लड़कों का शेरों के

सम्बन्ध में पैदा हुआ कौतुहल और रुक न सका। वह अभी शेर और जेवरों के सम्बन्ध में कुछ और पूछना चाहते थे। प्रमोद से आखिर न रहा गया। बोला—अच्छा जोगिया बाबा, एक बात तो बतायें, क्या आपने शेर और जेवरे की लड़ाई देखी ?

मैं जानता था कि तुम लोग यह प्रश्न मुझसे जरूर पूछोगे इसीलिए मैं तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए

आगे की बात कहने लगा था। हां तो सुनो—मैंने असली लड़ाई देखी और वह भी एक योरपी मित्र के घर से। यह यूरोपी मित्र एक बड़े कुशल शिकारी थे। मेरे जादू के कुछ खेल देख वह मेरे मित्र हो गए थे। एक दिन उन्होंने मुझे अपने पेड़ पर बंधे मचान पर शेर और जेवरे की लड़ाई देखने को बुलाया। सौभाग्यवश मैं उस दृश्य को देख पाया। तुम लोग उस दृश्य को देखते तो रोंगटे खड़े हो जाते। अच्छा ज़रा दिल मजबूत कर सुनो।

मैं और मेरा योरोपी मित्र दोनों खारी मिट्टी के पेड़ों पर बने एक मकान पर बैठे थर्मस से खोलकर चाय पी रहे थे। मेरे मित्र मुझे अपने शिकार के बड़े रोमांचकारी किस्से सुना रहे थे। मैं तन्मय होकर उनसे किस्सा सुन रहा था। इसी समय बड़ी धूल उड़ी जो एक ओर से आती नजर आयी। झुंड आ रहा था। आज हम लोग बड़े भाग्यवान हैं, शेर और जेबरों की असली लड़ाई देखने को मिलेगी।

मेरे मित्र इतना कह अपना कैमरा ठीक करने लगे मैं कैमरा साथ न ले गया था। मुझे बड़ा दुःख हुआ। खैर जेवरों का झुंड धीरे धीरे फैल गया था। वह पत्थर को चाट चाट खुश होते और इधर उधर भागते

दौड़ते। करीब एक घण्टे तक यह दृश्य हुआ। इसी समय हमें शेर की गर्जना सुनाई पड़ी। सारा जंगल दहल गया। मैं जहां बैठा था वहां अपने हाथ से खूब मजबूती से एक रस्सी को पकड़, दिल कड़ा कर बैठ गया। मेरे जीवन में यह पहला दृश्य था जब मैं अपनी आंखों के सामने करीब एक दर्जन शेरों को दहाड़ते सुन रहा था।

जेवरे शेर की दहाड़ सुन इधर-उधर भागने लगे। कुछ जेवरे अपने गिरोह से तितर बितर हो गये। शेर इसी मौके में थे। उन्होंने चार जेवरों को धर दबोचा। जेवरों ने भागने की और शेर के पंजे से छूटने का बड़ा प्रयत्न किया परन्तु सब बेकार। चारों जेवरे मारे गये, बाकी सब भाग गए।

शेर जेवरों के ऊपर मुंह रक्खे उनका खून पी रहे थे। मेरे योरपी मित्र ने कई एक फोटो लिए। मैं शेर का जेवरों का मांस खाना ज्यादा न देख सका अतएव मुंह फेर लिया। हां! तो प्रमोद तुम्हें कुछ आनन्द आया, बाबा बोले।

प्रमोद ने कहा—बाबा! आप बड़े डरपोक है। शेर को जेवरों को मार-कर खाने का दृश्य भी न देख सके। खैर अब आप हमें फोटो दिखाईये। मैं जानता

हूँ कि आपने योरपी दोस्त से अवश्य बाद में फोटो ली होंगी।

राजेन्द्र और राकेश, भी बाबा के पीछे पड़ गये। तुम बड़े शरारती हो अच्छा तो ठहरो दिखाता हूँ लो देखो इन फोटुओं को। बाबा ने अपने थैले मे फोटो निकाल बच्चों को दिखलाई।

तीनों बच्चे फोटो को बड़ी देर तक देखते रहे। बाबा तब तक चाय बनाकर ले आये और खुद तीनों बच्चों के साथ बैठ कर पीने लगे।

चाय समाप्त करने पर बोले—अच्छा अभी थोड़ा समय और है तुम्हें कुछ और सुना दें, सुनो।

भाग्यवान पंछी

अपने निश्चय के मुताबिक हम ससाका शहर को घूमने के बाद कंपाला जाने के लिये चले। यह सफर हमने मोटर पर किया। मोटर का हब्शी ड्राईवर बड़ा मिलनसार था। उससे टूटी-फूटी स्वाहिली में बातचीत करने में बड़ा मज़ा आता था। उसने मुझे हब्शी लोगों के विषय में बहुत बातें बताईं। हब्शी लोग एक तरह के झालर वाले पंछी को भाग्यवान पंछी कहते हैं। उसके बारे में उन लोगों का ख्याल है कि यह पंछी गांव के किसी पेड़ पर बैठा हुआ हो तो उसे देखने के लिये हब्शी लोग दौड़ते जाते हैं। इस पंछी को देखने से कष्ट पास नहीं आ पाते—ऐसा भी उनका विचार है।

इसी प्रकार गिरगिट और नेवले को भी वह लोग शुभ मानते हैं। उनका विश्वास है कि शिकार के लिये निकले हुये शिकारी का रास्ता गिरगट काटे तो शिकार अवश्य मिलेगा। नेवले को शुभ प्राणी माना जाता है। लेकिन उसे घर में पालने

का रिवाज नहीं हैं। कहा जाता है कि शुभ प्राणी को घर में पाल रखने से घर के लोगों की किस्मत बाहर चली जाती है।

मासाका और कंपाला के बीच में अनेक छोटी-बड़ी नदियां हैं। एक नदी पर पुल न बांध कर वहां बेड़ा रखा था। हम मोटर के साथ उसमें जा बैठे। नदी का पानी बहुत जोर से बह रहा था। धारा में कमल की तरह किसी बेल के पत्ते बह रहे थे। कुछ पत्तों पर छोटे और हरे रंग के मेंढ़क बैठे नज़र आये। यह मेंढ़क नहीं हैं बल्कि उसी बनास्पति के फल हैं। यह बनास्पति हमेशा पानी में तैरती रहती है और वहीं पनपती है।

हम बेड़े की सहायता से उस पार गये। वहां हमने मंगाड़ी जाति के लोग देखे। वह लोग वल्कल पहने थे और उनके निचले होंट में हाथी दांत की अंकड़ी लटकी हुई थी। इस जाति के लोग दो-तीन तरह के धंधे करते हैं। जंगली जानवरों की खालों और रंग बिरंगे पंछियों के पर बेचना, नये मुसाफिरों को जंगली अजीब चीजें दिखाना—यही उनका धंधा है। अफ्रीका के जीवन पर आधारित अनेक फिल्मों में इस जाति के लोगों ने काम किया है। उनकी भाव

भंगी इतनी स्वभाविक होती है कि देखने वाला चकित हो जाता है। हम लोगों ने उन्हें कुछ सिगरेट इनाम दिये। वह बड़े खुश हुये। उनमें से कुछ लोगों के पास तीर कमान थे। ये लोग जहरीले तीरों से शिकार करने मे बड़े उस्ताद हैं।

ये जहरीले तीर तैयार करने के अनेक तरीके हैं। सबसे मशहूर तरीका सांप के पेड़ के पत्तों का ज़हर चढ़ा कर तीर तैयार करना है। अफ्रीका में कुछ खौफनाक सांप है। हर रोज़ उनके सिर में इतना जहर तैयार होता है कि किसी न किसी को डसे बिना चैन नहीं आता। अगर यह सांप किसी को न डसे तो उसका असर उन पर ही हो जाता है। हर रोज डसने के लिये आदमी या जानवर मिलना मुश्किल हो जाता है। अतएव ये सांप नरम जड़ों वाले एक खास पेड़ को डसते हैं। सांप के डसने पर उनका जहर पेड़ के पत्तों पर और जड़ों में फैल जाता है। हब्शी वैद्य या बनास्पति पण्डित, ऊंची ऊंची लाठियों के सहारे चलता हुवा पेड़ के पास जाता है। क्योंकि उस स्थान पर उन पेड़ों के आस पास सांप हमेशा होता है। लाठियों के सहारे चलने में सांप से खतरा नहीं रहता। वह हब्शी उस पेड़ को उखाड़ कर घर लाता

है। चकमक रगड़ कर बनाया हुआ चश्मा वह अपनी आंखों पर लगाता है। जड़ों और पत्तों का निचोड़ निकाला जाता है। इस ज़हर के रस की भाप आंखों को न लगे इसीलिए चश्मा लगाया जाता है। बाद में तीरों को इस रस में डुबो कर आग में तपाया जाता है। इन जहरीले तीरों से हाथी भी मर सकता है।

हाथियों का झुंड

हमारी मोटर कंपाला की ओर दौड़ती जा रही थी। राह में इतना घना जंगल मिला कि दिन में सफर करते हुये भी डर सा लग रहा था। इसी जंगल में हाथियों के झुंड होते हैं। ये झुंड इतने बड़े होते हैं कि एक एक झुंड के हाथियों की संख्या सौ-डेढ़ सौ तक हो सकती है। हाथियों के झुंड के आने की आहट दो-तीन फर्लांग से सुनी जाती है। पेड़ के सूखे पत्तों पर उनके पैर पड़ने से और पेड़ों को सट कर चलने से एक तरह की खड़खड़ाहट आती है। हाथी अपनी ओर आ रहा है यह मालूम पड़ते ही मोटर रोकनी पड़ती है। मोटर रुकते ही आस पास से भी बकाया हाथी निकल जाते हैं। कोई अगर भूल से मोटर चलाता रहे तो हाथी उसका पीछा करते हैं और मोटर पर हमला करते हैं। तेज रफ्तार से मोटर चलाने पर हाथी पीछा छोड़ देते हैं और एक तरह की आवाज निकालते हैं। यह आवाज सुनते ही आगे के दो चार मील की दूरी पर उस मुसाफिर का

स्वागत करने के लिये हाथियों का दूसरा झुंड सड़क पर खड़ा होता है। ऐसी मुसीबत में फंसने का मतलब है-मौत के मुंह में चले जाना।

हाथी बड़ा समझदार जानवर होता है। दूसरा कोई भी जानवर हाथी के मुकाबले में समझदार नहीं होता। हाथियों के बारे में कई मजेदार बातें हैं। हाथी मरते वक्त ऐसी वैसी जगह नहीं मरता। बड़े घने जंगल में एक गुफा निश्चित करके उस जगह मरता है। शायद उसका यह कारण है कि मरने के बाद उसकी हड्डियां और दांत किसी के हाथ न लगें। ऐसी गुफा में अनेक मरे हुए हाथी होते हैं। योरपी लोग इन हाथी दांत की गुफाओं की और खानों की खोज में घने जंगल छानते फिरते है। हाथी दांत की एक गुफा की जगह यदि मिल जाये तो आदमी माला-माल हो जाता है।

अगर कोई हाथी गुफा छोड़कर किसी कारण दूसरी जगह पर मर जाये तो ऐसे मौके पर हाथियों की चतुराई दिखाई देती है। अपने प्रचंड दांतों से ये हाथी गढा खोदते हैं और उस मरे हुये हाथी को उसमें दफन करते हैं। यहाँ तक कि गढे पर पत्ते और पेड़ की टहनियाँ रखते हैं। जिससे किसी को पता न

चले। कई शिकारियों का कहना है कि मरे हुये हाथी के चारों ओर दूसरे हाथी घेरा बनाकर बैठते हैं और आंसू बहाते हैं। जिस समय हाथी घेरा बनाकर बैठते हैं और आंसू बहाते हैं उस समय हाथी अपनी सूंडों से दिल पिंघला देने वाले हाव भाव प्रकट करते हैं और उनकी आंखों से आंसुओं की धाराएं बहती हैं। उन्हें देखकर इन्सान का पत्थर दिल भी काँप उठता है।

अफ्रीका में एक हाथी को मारने के लिये सौ पौंड सरकार को कर देना पड़ता है। पहिले यह रकम पचास पौंड थी।

× × ×

कंपाला शहर के इस पार दो मील पर बड़े बड़े बाग हैं। इन बागों में लगाये हुये पेड़ फलों से इस तरह लद गये थे कि उनकी टहनियां जमीन छूती थीं। यहां संतरे और मौसम्बी के सबसे ज्यादा पेड़ हैं।

मैं कंपाला शहर में शाम को सात बजे पंहुचा। शहर की सड़कें साफ सुथरी थीं। यह शहर अलग अलग सति पहाड़ियों पर बसा है। रात में यह झाड़ फानूस की तरह नजर आता है।

हम लोगों ने एक हब्शी को घर में काम धंधे के लिये नौकर रखा। वह ईसाई धर्मी था। टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलता था। मन ही मन खाक भभूत देने वाले देवताओं का भक्त बन गया था। उसकी जेब में कुछ जड़ी बूटियां थीं। काम में भूल होने पर या उसकी कोई बात उसकी समझ में न आने पर, वह अपने चोगे की जेब में हाथ डालता था। मुझे पहले-पहल उसकी यह हरकत पागलों जैसी लगी, बाद में पत्ता चला कि उसकी जेब में मंत्रित जड़ी बूटियां थीं। उसका ख्याल था कि उन बूटियों पर हाथ रखने से मालिक नौकर को नहीं डांटता। अफ्रीका के हब्शी का मज़हब चाहे इस्लाम हो या ईसाई वे उसका पालन नाम मात्र करते हैं। भूत-प्रेत, जंगल के पेड़-पत्थरों के देवता यही उनके भगवान हैं। अफ्रीका के लोगों का जीवन अभी अन्य सभ्य संसार के लोगों से काफी पिछड़ा है।

देहातों में आज भी खेती के सुधार के नये तरीके नहीं हैं। बैलों की सहायता से खेती करना, लोहे के हल या दूसरे अच्छे हल इस्तेमाल करना, अच्छे बर्तन तथा मिट्टी के प्रयोग से ईंटें बनाना, ये मामूली बातें भी हब्शी लोगों को अभी तक नहीं मालूम

हैं। देहात में गोल शक्ल के गुंबद से झोंपड़े वाले घर में वे लोग रहते हैं। शहर के सुधारों से उनकी आंखें चकित होती हैं। सभा–सम्मेलन द्वारा संगठित होकर अपने दुःख-दर्द शासकों से कहने की हिम्मत उनमें नहीं है।

अफ्रीका की औरतें तो अभी और भी पिछड़ी हालत में हैं। उनमें आज की सभ्यता के कोई भी गुण नहीं पाए जाते।

कंपाला शहर में आगा खान संप्रदाय के लोगों की आबादी बहुत है। पूजा के लिये उनकी बड़ी बड़ी मस्जिदें है। ये लोग बड़े धनी और शौकीन हैं। बढ़िया कपड़े और इत्र की बोतलें उंडेल कर वे रास्ते में आते जाते नज़र आते हैं।

उनकी औरतों को इत्र का बड़ा शौक है। इत्र के कारण उन लोगों के आने का एक फर्लांग दूरी से ही पता चल जाता है।

इत्र का नाम सुन के प्रमोद के मुंह से अचानक निकल पड़ा–अहा ! क्या बढ़िया खुशबू आरही है।

राजेन्द्र और राकेश दोनों प्रमोद का आश्चर्य से मुंह ताकने लगे। जोगिया बाबा भी प्रमोद की तरफ

देखने लगे परन्तु प्रमोद चुप-चाप आंख बन्द किये बार-बार यह कह रहा था—अहा ! क्या बढिया इत्र की खुशबू है।

राजेन्द्र ने धीरे से प्रमोद का कान पकड़ कर कहा—अरे क्या कहे जा रहा है। होश में आकर देख, बाबा बड़े नाराज हो रहे हैं। वह फिर हमें कहानी नहीं सुनायेंगे।

कहानी के लालच में प्रमोद ने आंखें खोलीं और फिर बोला-अरे ! मैं क्या कह रहा था ? मैं तो अभी-अभी अफ्रीका देश में इत्र लगाये लोगों की खुशबू सूंघ रहा था। फिर मैं यहां कैसे आगया ?

जोगिया बाबा बोले—मालूम पड़ता है, प्रमोद ! तुम मेरी बात सुनते-सुनते अफ्रीका का सपना देखने लग गये थे। तुम्हें लेकिन एकाएक नींद कैसे आगई।

तुम्हारी नींद देखकर मुझे अफ्रीका की निद्रा रोग फैलाने वाली मक्खियां याद आगईं। मक्खियां नींद भी फैलाती हैं। हमने तो अब तक यही सुना था कि उनसे गन्दगी तथा बिमारी ही फैलती है। प्रमोद बोला।

हां ! हां ! अफ्रीका में ऐसी मक्खियां हैं। उसे त्से-त्से मक्खी के नाम से पुकारते हैं। उसके बारे में

मैं कुछ बताता हूं—जोगिया बाबा बोले। त्से-त्से, मक्खी अफ्रीका के बहुत से मुल्कों में पायी जाती है। ये मक्खियां मामूली मक्खियों से कुछ बड़ी होती हैं। इनका रंग पीला होता है। इन मक्खियों के काटने पर जानवर बच नहीं पाते। अफ्रीका में मुझे कहीं भी घोड़े या भैंसें नज़र नहीं आईं। शायद इसकी वजह यही थी।

यह मक्खी पेड़ के तने पर बैठी रहती है। वहीं से यह अपना शिकार भांप लेती है। फिर उस शिकार के शरीर पर जा बैठती है और उस शिकार को डसती है। उनकी सूंड बड़ी तीव्र होती है। वह आसानी से दरयाई घोड़े की तरह के मोटी खाल वाले प्राणियों के शरीर से खून चूस सकती है। आदमी के शरीर पर ऊनी कोट हो तो भी उस पर बैठकर वह अपना काम कर सकती है। मक्खी के काटने पर आदमी को निद्रा रोग हो जाता है। वह हमेशा सोया रहता है और बाद में मर जाता है। इस बिमारी को फौरन पहचान लेने पर ही आदमी बचाया जा सकता है लेकिन देरी हुई कि आदमी मरा। ये मक्खियां कभी एक ही शहर में नहीं रहती। कुछ सालों के बाद यह अपनी जगह बदल लेती हैं। इन मक्खियों से होने वाली

बिमारी की खोज को जारही है। उसमें प्रयोग के लिए बन्दर और दूसरे जानवर पिंजड़े में रखे गए हैं।

बड़ी ही अजीब मक्खी है वह, प्रमोद बोला। मै जो एकाएक सो गया था शायद इसी कारण कि आप मक्खी की ही कहानी अब सुनाने जा रहे हैं। उनके विचार मात्र से ही बड़ा डर लगता है।

डर लगता है ! क्यों ? क्या इसी बलबूते पर ही इस दिलेर भवन का निर्माण किया था। देखो ! मै तो अफ्रीका घूम आया। बिल्कुल भी नहीं डरा। लेकिन देखें तुम लोग कैसे विश्व–भ्रमण करते हो। डर तो कोई चीज़ ही नहीं है, यह तो केवल मन का भ्रम मात्र है-जोगिया बाबा बोले।

प्रमोद बड़ा लज्जित हुआ। राजेन्द्र और राकेश उसकी ओर देख कर मन्द-मन्द मुस्करा रहे थे। अपने साथियों के सामने ही वह बड़ा लज्जित किया गया था। अपनी झेंप मिटाने के लिए बोला-नहीं-नहीं, मैने तो सिर्फ यूं ही कहा था। मैं डरा थोड़ा ही हूँ।

सभी लोग उसकी सफाई सुन हंस पड़े। इसी समय घंटा घर की घडी से टन-टन की आवाजें सुनाई पड़ीं। नौ बज चुके थे अतएव जोगिया बाबा बोले— अच्छा अब नौ-दो-ग्यारह हो जाओ। काफी देर हो

चुकी है। तुम लोगों ने तो खोपड़ी ही चाट डाली। सभी बच्चे धीरे धीरे उठकर चले गये।

आज बसंत पंचमी का दिन था—सभी स्कूल आदि बन्द थे। घर पर आज खीर और जलेबी पकाई जा रही थी। सभी ऋतुओं के राजा बसन्त ऋतु का स्वागत कौन व्यक्ति उमंग के साथ न करे। अमीर गरीब सभी, प्रकृति की निराली शोभा तथा वातावरण से मुग्ध हो खुशी मना रहे थे।

प्रमोद आज कुछ देर से उठा। उसकी मां ने उसे दो बार जगाया तब जाकर उसकी आँख खुली। रात को देर से सोने के कारण और फिर अफ्रीका की कहानी का विचित्र सपना आदि उसके दिमाग में चक्कर काट रहे थे। अतएव जब वह सोकर उठा तो उठते ही अपनी माँ से बोला-माँ, मैं अफ्रीका घूमने जाऊंगा। वहाँ बड़े-बड़े जानवर हाथी आदि हैं। ऐसी ऐसी मक्खियां है जो काट लें तो बस आदमी को मरा ही समझो।

क्या तू सवेरे-सवेरे बहक रहा है ? माँ ने कहा—पता है आज बसन्त पंचमी है। जल्दी से नहा-धो ले। फिर सरस्वती की पूजा कर खाना खा। देख तो आज बच्चे पतंग उड़ाने के लिए सवेरे ही सवेरे जाग गए

हैं। तू तो पता नहीं किस जोगिया बाबा के पास जाता है और क्या-क्या, सुन सुन कर बहकी हुई बातें करता है। आज मैं भी तेरे साथ चल कर देखूंगी कि कैसे हैं तेरे वह बाबा।

इसी समय प्रमोद को आवाज़ पड़ी। नीचे राजेन्द्र और राकेश थे। प्रमोद ने खिड़की से झांक कर उन्हें ऊपर बुलाया।

राजेन्द्र और राकेश दो पतंग और चर्खी लिए हुए थे। ऊपर आते ही बोले-तू अब तक सो रहा है। अबे! आज बसंत पंचमी है। चल नदी किनारे पतंग उड़ायेंगे।

प्रमोद इशारे से अपने दोस्तों को चुप करना चाहता था ताकि उसकी मां को उनके प्रोग्राम के बारे में पता न चले पर अब तो उसकी मां ने सब सुन लिया था। मां बोली-अरे राजेन्द्र! तुझे घर पर कोई कुछ कहता नहीं। मिलने दे अपनी मां को, हुआ सवेरा और आ गये, चले पतंग उड़ाने। हां और तेरा वह जोगिया बाबा कौन है? चलो आज मै भी तुम लोगों के साथ चलकर देखूँगी कौन तुम लोगों को बहका रहा है।

राजेन्द्र बोला-नहीं चाची मुझे तो खूब डांट घर पर पड़ी है। आज तो त्यौहार है न। इसलिये मां ने पतंग उड़ाने की छुट्टी देदी है। मैं राकेश के घर से इसे भी अपने साथ ले आया हूँ। चाची आज पतंग न उड़ाने से भगवान नाराज़ हो जाते हैं। प्रमोद को भी आप आज्ञा देदें-नहीं तो बड़ा अपशकुन होगा।

चल हट मुझे पढ़ाने आया है, प्रमोद की मां बोली —पहले मुझे तो तुम लोगों के साथ आज तुम्हारे जोगिया बाबा को देखना है। फिर तुम लोगों को पतंग उड़ाने जाने दूंगी।

राकेश अब तक चुप था बड़ी ही मिठास से बोला-चाची तो फिर तुम भी हमारे साथ तालाब के किनारे चलना। वहां हम लोग पतंग उड़ायेंगे और बाबा से भी मिला देंगे। चलो जल्दी से आप तैयार होकर हमारे साथ चलें।

अच्छा! अच्छा! तुम लोगों को मैं जानती हूँ। तुम बड़े शैतान हो। जा प्रमोद जल्दी से तैयार होकर जा अपने दोस्तों के साथ। मैं तो आज जा नहीं सकती घर पर ही बड़ा काम है किसी दिन शाम को चलूंगी।

तीनों साथी झटपट तालाब के किनारे पहुँचे। पतंग उड़ाने से ज्यादा उनमें अफ्रीका के बारे में सुनने

का चाव था वह सीधे उस बरगद के पेड़ के पास पंहुचे। देखा बाबा बैठे लिख रहे हैं। धीरे से तीनों उनके सामने जा खड़े हुए।

बाबा ने इन्हें देखते ही कहा-अरे तुम तीनों आज अभी से कैसे आगये, क्या स्कूल नहीं गए ?

प्रमोद बोला-स्कूल की तो आज छुट्टी है। हम लोगों को तो आज बिल्कुल घर से दिन भर खेलने-कूदने की छूट है।

अरे ! मैं तो भूल ही गया था। आज तो बसन्त पंचमी की छुट्टी है, बाबा बोले।

हां, बाबा—राजेन्द्र बोला, आज छुट्टी है और आज आपकी मेरे घर दावत है। मेरी मां ने आपके बारे में सुना तो बोली, ठीक है। उन्हें आज शाम को घर पर खाना खाने लिवा लाना।

बाबा बोले—न, न, मैं कहीं नहीं जाऊंगा। तुम लोग मुझे परेशान कर डालोगे। मैं तो कुछ दिन एकान्त में रहकर कुछ लिखना-पढ़ना चाहता हूँ। मेरे बारे में कह सुनकर तुम लोग मुझे यहां रहने न दोगे।

लेकिन बाबा! आज बसंत पंचमी है। हमारी मां ने आज खीर पकाई है और साधु लोगों को तो आज

के दिन खिलाना बड़ा शुभ होता है। आपको तो शाम को चलना ही होगा।

बाबा कुछ न बोले, चुप रहे। तीनों लड़के अपनी पतंग और चर्खी उस कोठरी में रख कर बैठ गए।

बाबा थोड़ी देर लिखते रहे, फिर बोले—तो तुम

लोग पतंग नहीं उड़ाओगे। अफ्रीका की कहानी ही सुनोगे।

तीनों एक साथ बोल उठे-हां-हां, बाबा ! कहानी सुनाइये। तो लो सुनो...बाबा बोले।

मैं अब तुम लोगों को मगर की एक विचित्र घटना बताता हूँ। तुम्हें एक खास मगर की कहानी सुनाता हूँ। अटेबी से छः मील की दूरी पर विक्टोरिया झील में एक पालतू मगर है। यह मगर जब छोटा था तब एक हब्शी लड़का झील के किनारे मछलियां पकड़ने जाया करता था। मछलियां पकड़ते समय लुटेंगे, लुटेंगे, इन शब्दों से प्रारम्भ होने वाला कोई शब्द का गीत वह गुनगुनाया करता था। यह लड़का मछलियां पकड़ने के बाद एक दो मछलियां देवता के नाम पर झील में फेंक देता था। झील का वह मगर उन मछलियों को खा जाता। कुछ दिनों के बाद उस लड़के से मगर की दोस्ती हो गई। लड़का अपने हाथों से मगर के मुंह में मछलियां देने लगा। आगे चलकर वह मगर लड़के के साथ पत्थर पर बैठने लगा। आज भी वह दृश्य देखा जाता है। हब्शी लड़के को कुछ पैसा देने पर वह गोश्त का टुकड़ा या मछलियां लेकर पत्थर पर खड़ा हो जाता है और लुटेंगे, लुटेंगे

कहकर मगर को पुकारता है। थोड़े समय में मगर आता है और लड़का अपने हाथों से मगर के मुंह में गोश्त का टुकड़ा दे देता है। इस मगर के लिये सरकार की ओर से बड़ी हिफाज़त है और यह ऐलान है कि जो इस मगर को मारेगा उसके लिए बड़ी सज़ा होगी।

राकेश बोला—बाबा क्या आपने भी इस मगर को देखा ?

बाबा के उत्तर देने से ही पहिले प्रमोद बोला—राकेश तू निरा घोंघा है। अरे अगर वह न देखते तो फिर यह बात कैसे बताते।

राकेश खिसियाना सा होकर बोला—घोंघा मैं नहीं तू है। क्या सभी बातें देखकर ही कही जाती हैं। सुनी हुई भी तो बहुत सी बातें बाबा ने बतलाई हैं। हो सकता है किसी हब्शी से बाबा ने इस सम्बन्ध में कुछ सुना हो और हमें बता दिया हो।

बाबा बोले—राकेश तुम ठीक कहते हो। मगर के संबंध में मैंने सुन ही रखा है। मैं स्वयं देख न सका कारण मैं हब्शियों का नाच देखने चला गया था। मैं हब्शी लोगों की प्रत्येक आदत और रिवाज से

परिचित होना चाहता था इसीलिये मैं वह मगर देख न सका।

अच्छा मैं तुम्हें उनके नाच के संबंध में पूरी बात बताता हूँ। मुझे कुछ हब्शी लोगों ने नाच देखने के लिए निमन्त्रित किया। नाच रात में था परन्तु वहां पहुँचने के लिए मुझे दोपहर को ही अपने डेरे से जाना पड़ा। नाच रात के ठीक साढ़े आठ बजे शुरू हुआ। चारों ओर काफी अंधेरा फैला हुआ था। बहुतेरी झोंपड़ियों में भी अन्धेरा था। गांव के बीच में अलाव जलाया गया था। मेरे पहुँचने पर एक केलों का घोंद रखा गया। हब्शी लोग अतिथि का सत्कार ऐसे ही करते हैं। आज इस गांव वालों को जंगली जानवर का बड़ा शिकार मिला था। उसे साफ करने का काम अलाव की रोशनी में कुछ नौजवान कर रहे थे। अलाव पर इस शिकार का गोश्त भूनने को रखा गया। बहुत से लोग अलाव के पास जमा थे। तूंबे के बने हुए बाजे बजा रहे थे। उस बाजे से टुंका टुंका की आवाज निकल रही थी। इन बाजों के साथ तारों का बनाया एक बाजा भी था। जो टिंग टांग की आवाज़ें दे रहा था। गोश्त का टुकड़ा भूनने से पहले शराब से भरे हुए तीन तूंबे लाए गये। हर एक तूंबे में १०–१२

खोखली सींखें रखी गई थीं। सबसे पहले गिरोह के मुखिया ने गोश्त खाया और फिर और लोगों ने खाना शुरू कर दिया। सब लोग गोश्त के साथ तूंबे में भरी हुई शराब सींकों की सहायता से पी रहे थे। भोजन के कार्य-क्रम में मर्द-औरत का फर्क नहीं किया जा रहा था।

भोजन के बाद बाजे संभाले जाने लगे। कुछ गप–शप होने के बाद नाच शुरू हुआ। नाच करने वाले हब्शी लोगों ने कंकड़ की भरी हुई कपड़े की थैलियां कमर में बांधी थीं। उन कंकड़ों से निकलने वाली हर आवाज़ लय बद्ध थी। कुछ नाचों में गाने गाये जा रहे थे, लेकिन गानों का मतलब समझना मेरे लिए बिल्कुल मुश्किल था।

सबसे अच्छा नाच डोल का नाच था। इस नाच में हब्शी स्त्रो का सच्चा कौशल प्रकट होता है। बाजों में ताल पर एक औरत सिर पर डोल उठाकर रखती है। डोल पानी से भरा होता है। उसे सिर पर रखकर वह अनेक भाव भंगिमा कर दिखाती है लेकिन पानी की एक बूंद भी नीचे नहीं गिर पाती। धीरे धीरे, बाजों की गति के बढ़ने पर वह औरत एक ही जगह पर तेज़ी से घूमने लगती है। घूमने की रफ्तार पर डोल

के अन्दर का पानी चारों ओर फेंका जाता है और फिर बाजों के साथ ही नाच रुक जाता है। जब वह औरत घूम रही थी तो मुझे लगा कि रुकते ही इसे चक्कर आयेगा। लेकिन उसे कुछ भी नहीं हुआ। वह आदाब से झुकी और चली गयी।

मुझे नाच काफी पसंद आया। कुछ हब्शी लोगों ने हमारे देश के फिल्मी गाने गाकर हमें सुनाये। मुझे उनके मुंह से भारतीय गाना सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ—पर बाद में पता चला कि हमारी भारतीय फिल्में उस देश में बड़े शौक से देखी जाती हैं। हब्शी उन्हें बड़ा पसंद करते हैं।

क्या हब्शी हमारी भाषा जानते हैं? बाबा, वह हमारी फिल्में कैसे समझ लेते हैं। प्रमोद ने पूछा।

बाबा बोले अफ्रीका में विशेष कर पूर्वी अफ्रीका में हिन्दुस्तानी काफी हैं। यह तो मैं पहिले बता चुका हूं। हम लोगों के साथ रहने से वह हमारी भाषा काफी समझ लेते हैं। फिल्म की तर्ज जो काफी प्रचलित हो जाती है उसे वह रिकार्ड आदि सुनकर तथा सुनते सुनते, कंठ कर लेते हैं। कुछ हब्शी लोगों का गला बहुत ही अच्छा था। वह गाने की बिल्कुल नकल कर लेते थे।

विचित्र पत्ते

खैर हब्शी लोगों का नृत्य पसंद किया। रात को मुझे उन्हीं के गांव में रहना पड़ा, क्योंकि डेरे पर लौटना बड़ा खतरनाक था। रास्ते में जंगली जानवर, चोर और लुटेरों का डर रहता है। रात भर रहने के पश्चात मैंने उन लोगों से विदा ली। विदाई के समय मुझे एक सौगात मिली और वह सौगात थी एक पत्ता। तुम लोग सुनकर हैरान होगे आखिर उस पत्ते में ऐसी कौन खास बात थी। जिसे मुझे भेंट किया गया। मै तुम्हें बताता हूँ। यह पत्ता आलस्पाइसेस, (अर्थात सभी मसालों के गुण वाला) पेड़ का था। इस पत्ते की यह ही विशेषता थी कि उसका एक टुकड़ा मुंह में रखते ही दालचीनी, इलायची, लौंग आदि के स्वाद एक के बाद एक करके आते हैं। तुम इस पत्ते के स्वाद को चखना जरूर पसंद करोगे। प्रमोद, वह मेरा थैला उठाओ ?

बाबा ने तीनों बालकों को थोड़ा थोड़ा, पत्ता दिया। पत्ता मुंह में रखते ही सभी लोगों को तीन

स्वाद दालचीनी, इलायची और लौंग के एक साथ आने लगे।

प्रमोद पत्ता खाकर बोला—बाबा यह पत्ता आपको जादू के खेल के लिए बड़ा सहायक है। आप शायद इसीलिए साथ ले आये हैं।

हां, तुम्हारा ख्याल ठीक है। परन्तु मैं इसके अतिरिक्त भी ऐसी चीजें कर सकता हूं। जैसे नाना प्रकार की खुशबू आदि पैदा करना। बाबा बोले।

पत्ते का जिक्र आने से मैं तुम्हें एक और किस्म के पेड़ के बारे में बताता हूँ, यह पेड़ है एक किस्मका सेवार। इसे लगाने से घर के ऊपर ठण्डक रहती है। सच है भगवान ने हर जगह पर मनुष्य के लिये आराम का इन्तजाम कर रखा है, केवल उसे हाथ पांव हिलाने की जरूरत है।

अच्छा तो अफ्रीका की बनस्पति की चर्चा चलने पर हम तुम्हें कुछ और पेड़ आदि के बारे में बतलाते हैं।

थिका नामक एक गांव में एक हब्शी दोस्त ने एक विचित्र प्रकार की वनास्पति दिखलाई। यह खून चूसने वाले पौधे हैं। इस पेड़ के पत्ते तोड़कर

हाथ पर रखते हैं। ऊपरी पर्त पर लगे हुए रेशों जैसे महीन कांटों से पत्ते में खून निकल कर मिल जाता है। ये पत्ते जब खून चूसते हैं तब किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता।

अफ्रीका जैसे गर्म मुल्क में ईश्वर ने कुछ और भी बड़े विचित्र प्रकार के पेड़ बना रखे हैं। हमारे हिन्दुस्तान में गर्मी में बड़े-बड़े धनी लोग जनता के लिए पानी पीने के लिए प्याऊ आदि लगवा देते हैं। परन्तु अफ्रीका में ऐसी प्याऊ ईश्वर ने ही लगवा रखी है। इस प्याऊ को ईश्वर ने पेड़ों में लगा रखा है। इन पेड़ों को मुसाफिरों के पेड़ कहते हैं। जंगल में सफर करते समय पानी ढूंढने के लिये इधर-उधर जाने की जरूरत नहीं होती। इन मुसाफिरों के पेड़ों की टहनी तोड़ते ही एक जल धारा बहने लगती है। उस धारा के नीचे हाथ बढ़ाते ही चुल्लू भर जाता है। यह कुदरती प्याऊ का पानी पीकर अगला सफर तय कर सकते हैं।

इसी प्रकार रोशनी देने वाले पेड़ भी वहां बहुतायत से हैं। जंगल के सफर में रात में बिल्कुल भी डरने की जरूरत नहीं। रोशनी देने वाले पेड़ हर पथिक को राह दिखाने के लिये ईश्वर ने बना रखे हैं।

इस प्रकार के पेड़ मचिसिन प्रपात के पास भरपूर रूप से हैं। इन पेड़ों के पत्तों के ऊपरी हिस्सों पर एक किस्म की पर्त होती । दिन में सूर्य की रोशनी में इस पर्त में प्रकाश किरण चूसे जाते हैं और रात को वह पेड़ द्वारा बाहर फेंके जाते हैं।

सब से बड़े विचित्र पेड़ हंसने वाले होते है। तुम लोगों को ऐसी विचित्र बातें सुनकर बड़ी हैरानगी होगी। मुझे मेरे हब्शी मित्र ने एक आपबीती घटना सुनाई। वह इस प्रकार है—एक बार वह रोशनी देने वाले पेड़ों के इशारे पर रात में जंगल से गुजर रहा था, झींगुरों की झंकार चल रही थी। इतने में किसी की जोर से हंसने की आवाज आई। वह डरा और चौंक कर इधर—उधर देखने लगा। उसे भूत का डर हुआ पर शीघ्र ही उसके साथ के अफ्रीकी ने उसका संदेह मिटाया। तब कहीं जाकर वह शांत हुआ।

इस पेड़ के पत्ते पर खास तरह का खुरदरापन होता है। उसके कारण हवा के झोंके से पत्ते रगड़ खाते हैं, और हंसी की आवाज निकलती है।

राजेन्द्र ने हंसने वाले पत्ते की बात सुनकर कहा-सचमुच बाबा, अफ्रीका तो बिल्कुल जादू का देश है। भगवान ने अजीब अजीब पेड़ पौधे और जीव—जन्तु

यहां पैदा किये हैं। संसार में कहीं भी ऐसी अचरज भरी बातें हमने अब तक नहीं सुनी हैं।

न मैंने ही अब तक कहीं इन बातों को पढ़ा है, राकेश बोला। आपने तो बहुत ही विचित्र विचित्र बातें बतलाई हैं। सचमुच अगर आज हम पतंग उड़ाते तो फिर ऐसी अजीब बातें कैसे सुन पाते।

तुम दोनों निरे चुकन्दर हो। प्रमोद बोला। बनने चले हो दिलेर और पतंग की बात बीच में ले आये। अरे यह समझो कि बाबा हमें बड़े भाग्य से मिले हैं। इनसे यह सब सुनकर हम लोग पतंग में थोड़े ही अब अपना समय नष्ट करेंगे। मै तो अब बाबा से थोड़ा जादू का खेल सीखूंगा और फिर संसार का भ्रमण करूंगा।

तू क्या अकेला ही जादू का खेल सीखेगा। मै और राकेश भी सीखेंगे, बाबा को सिर्फ अकेला तू ही थोड़े प्यारा है, राजेन्द्र बोला।

अरे भाई! तुम तीनों ही मेरे बच्चे के समान हो। अभी तो तुम लोग अफ्रीका की बात सुनने के लिए मेरे प्राण खाये जा रहे थे, अब जादू का खेल सीखने को अपना प्लान बना रहे हो। खैर जब तक

यहां मैं हूं तुम लोगों के अधीन हूँ। तुम लोग मेरे अपने हो ।

राजेन्द्र ने ज़रा बाबा की ओर खुशामद करते हुए कहा-और बाबा, आज आपको मेरे साथ घर भी तो चलना है। खाना आपको वहीं खाना पड़ेगा ।

न भाई यह मेरे से न हो सकेगा, मैं कहीं आता जाता नहीं। मैं नहीं चल सकता। बाबा बोले।

आपको तो चलना ही पड़ेगा, चाहे जो हो जाये। मैं तो आपको ले जाए बिना नहीं रहूंगा, राजेन्द्र ने बड़ी नम्रता और आग्रह से कहा।

अच्छा-अच्छा, देखा जायेगा। शाम तो होने दो। अच्छा तुम लोग अब जाओ, मैं कुछ लिख लूं।

तीनों साथी उठ खड़े हुए। चलते-चलते राजेन्द्र बोला—मैं शाम को आपको लेने आऊंगा। आपको चलना ही पड़ेगा।

बाबा मुस्करा दिए। तीनों साथी अपनी पतंग और चर्खी ले तालाब के किनारे अफ्रीका की विचित्र बातें सोचते-सोचते चले गए।

राजेन्द्र के घर शाम को बाबा को जाना ही पड़ा। वहां प्रमोद और राकेश भी उपस्थित थे राजेन्द्र के पिता और माता को बाबा से मिलकर बड़ी खुशी हुई। बाबा ने उन लोगों के सामने कुछ जादू के खेल दिखाये। सभी बड़े प्रभावित हुए। राजेन्द्र के पिता बाबा से अफ्रीका के संबंध में कुरेद-कुरेद कर प्रश्न पूछने लगे। बाबा भी उनका उत्तर देते रहे। बात ही बात में राजेन्द्र के पिता ने बाबा से अफ्रीका के लोगों

को शादी की प्रथा आदि के बारे में पूछा। बाबा कहने लगे।

अफ्रीका में शादी के विषय में अनेक प्रथा प्रचलित हैं। अलग-अलग कबीले में शादी के अलग-अलग रिवाज प्रचलित हैं। एक कबीले में शादी का यूं रिवाज है। इस दल में लड़के की ओर से लड़की को दहेज देना पड़ता है। इस दहेज में दो गाएं, एक-दो बैल, कुत्ता और थोड़ा सा अनाज भी होता है। लड़के की ओर से दहेज दिया जाता है। अतएव दुल्हन की खोज करनी पड़ती है। पहले-पहले लड़के दल का मुखिया, दुल्हन खोजने जाता है कि किसी दल में लड़की शादी की उम्र की हुई या नहीं यदि किसी दल में शादी के योग्य लड़की है तो वह उस दल के मुखिया से मिलता है और वह भी मांग बताता है। लड़की के रिश्तेदार पूछते हैं कि आपका लड़का कितना बहादुर है। वहां बहादुर होने का मतलब है कि लड़के ने कितने सिंह मारे हैं। इस दल का मर्द चाहे कितनी भी शादी कर सकता है, पर पहली शादी बिना सिंह मारे नहीं होती। सिंह मारने का भी एक खास तरीका है। लड़का हाथ में पांगा नामक हथियार लेकर जाता है। कोई सिंह भरपेट मांस खाकर आराम से बैठा हो तो लड़का हाथ से उसे पत्थर मार कर होशियार करता है। सिंह क्रुद्ध

होकर लड़के पर झपटता है और लड़का उसे पांगे नामक हथियार से मार डालता है। सिंह को मारने के बाद लड़का उसके कान और पूंछ काटकर अपने दल में ले आता है। दल का मुखिया उसे रात में नाचने गाने की आज्ञा देता है। नाच गाने के बाद दल का मुखिया अपने लम्बे पत्थरों में से एक पत्थर लेकर गर्म करता है और उससे सिंह को मार डालने वाले लड़के के बाजू पर घेरे-दार दाग़ बना देता है। इस तरह के दागों का हाथ पर होना बहादुरी की निशानी मानी जाती है। दल के मुखिया का हाथ ऐसी कितनी ही निशानियों से भरा होता है।

लड़के ने इस तरह से कितने शेरों को मार डाला, इस बात की जानकारी लड़की वालों को बताई जाती है। लड़के की बहादुरी पर विश्वास होते ही दहेज तय किया जाता है। पहले-पहल, दहेज को लड़की के घर भेज दिया जाता है। लड़की के घर वाले उस दहेज को परख लेते हैं। इसके बाद उसी दिन लड़के को लड़की के दल में आने के लिए बुलावा भेजा जाता है। लड़के दल के लोग लड़की वाले के दल में आ जाते हैं। उनके बैठने का इंतजाम, घेरेदार बाग में किया जाता है। बैठने के बाद सब लोग अपने हाथ

की लाठियां ज़मीन पर पटक-पटक कर गाना गाने लगते हैं। लाठी के ऊपरी सिरे पर छोटे-छोटे पत्थर बांधे हुए होते हैं। लाठियां पटकते ही उन पत्थरों से एक अलग तरह की आवाज़ निकलती है। गाना रुकने पर लड़के के दल का मुखिया अपने लड़के की बहादुरी की निशानियां दिखाता है और उसके बारे में यह बताता है कि शिकार किस तरह से किया। इस बात की खूबी वर्णन करता है। मुखिया के भाषण खत्म होने के बाद लड़की के दल के मुखिये का भाषण होता है और वह बताता है कि अपनी लड़की कैसी साहसी और गुणवाली है। तब तक लड़की घर के अन्दर रहती है। अब उसे बाग़ में लाया जाता है वह किसी पत्थर पर बैठ जाती है। लड़के का मुखिया लड़के को इशारा करता है और लड़का उठकर लड़की के पीछे जाता है और पूरे ज़ोर से उसकी कमर में एक लात मारता है। इसके बाद लोगों को खाना और शराब दी जाती है और शादी का दिन तय हो जाता है।

जोगिया बाबा थोड़ी देर सोचने को रुके। सभी लोग बड़े उत्सुक हो कहानी सुन रहे थे। बाबा फिर बोले—शादी लड़के या लड़की के दल में नहीं होती,

बल्कि दोनों दलों की सरहद पर होती है। सरहद पर दोनों दलों के लोग नगाड़े बजाते हैं और चीखते, पुकारते हैं तथा गाते हैं। धर्मगुरू कुछ बड़बड़ाता है और ज़ोर से चिल्लाकर इशारा देता है। इशारा पाते ही लड़का, लड़की को और लड़की लड़के को अपनी-अपनी ओर खींचते हैं। अगर लड़के ने लड़की को खींच लिया तो वह लड़की हमेशा के लिए लड़के के दल की गुलाम बन जाती है। उसी तरह लड़की, लड़के को यदि अपनी ओर खींच ले तो लड़का भी अपने माता-पिता की ओर लौट कर नहीं जा सकता। इस समारोह के बाद फिर एक कर भोजन और शराब दी जाती है। बाद दोनों में दल अपने-अपने गांव चले जाते हैं।

राजेन्द्र के पिता ने यह विचित्र प्रथा सुनकर कहा—अजीब रिवाज है। दुनिया में क्या-क्या विचित्र प्रथा हैं। मैं तो अपने भारत के ही रीति-रिवाज को बड़ा हेर फेर वाला मानता था पर पता चलता है कि दूसरे देशों में भी बड़ी-बड़ी विचित्र रस्म आदि प्रचलित हैं। धन्य हैं आप जोगिया बाबा ! जो इतनी दिलचस्प बातें हमें बताई हैं।

पिता जी आपने तो कुछ भी नहीं सुना, हम

ने तो इससे भी मज़ेदार बातें सुनी हैं—राजेन्द्र बोला।

बाबा जी ! राकेश बोला-प्याऊ वाले पेड़ और हंसने वाले पेड़ की अगर आप सुनते तो हैरान होते।

पालतू मगर और जेवरों के शिकार की बात सुनकर तो आप को इतना अचम्भा होता कि फौरन अफ्रीका देखने के लिये चल पड़ते—प्रमोद बोला।

जोगिया बाबा और राजेन्द्र के पिता दोनों, तीनों बच्चों की बात सुनकर हँस पड़े।

जोगिया बाबा ने कहा—मैं इस सम्बन्ध में एक पुस्तक लिख रहा हूँ, आप उसे पढ़ियेगा। जितनी बातें मैंने इन बच्चों को सुनाई हैं सभी उसमें होंगी।

राजेन्द्र के पिता कुछ कहना ही चाहते थे पर इसी बीच में राजेन्द्र की मां बोल उठी—बाबा क्या अफ्रीका में भी लोग जादू टोने में विश्वास करते हैं। उसका भी कुछ हाल बताइये। बाबा बोले—हाँ हब्शी लोग अनेक भोले ख्याल पर विश्वास करते हैं। वे लोग भूत-प्रेत और जादू टोने पर बड़ा विश्वास करते हैं। कोई आदमी बीमार हो जाता है तो वे उसे अपने देवता के सामने ले जाकर रखते हैं। उनके

देवता हैं—बड़ा सा पेड़ या बड़ी भारी चट्टान। इस के प्रसाद से अगर बीमार बच जाये तो वे मान लेते हैं कि वह पापी था। असल में अभी तक अफ्रीकी हब्शी अन्धविश्वासी हैं और अभी तक उस पर विश्वास करते हैं।

रात काफी हो रही थी सभी लोग अभी भी जोगिया बाबा से कुछ सुनने को और लालायित थे पर जोगिया बाबा उठकर खड़े हो गये और बोले—आप लोगों को धन्यवाद ! शुभरात्रि !

—

यात्रा का अन्त

बरगद के पेड़ के नीचे आज काफी लोग जमा थे। तीनों साथियों के साथ-साथ उनके माता-पिता भी जोगिया बाबा की यात्रा के सम्बन्ध में उनकी

कहानी सुनने आये थे। अपने लड़कों से सारी घटना सुनकर उनको भी जोगिया बाबा को देखने का कौतुहल उत्पन्न हुआ था। आस-पास के लोग भी इतने लोगों को आते देख वहां इकट्ठे हो गये थे।

जोगिया बाबा ने सब लोगों का स्वागत किया और बैठाया। मन में उन्हें इतनी भीड़-भाड़ जमा होने से बहुत दुख हो रहा था पर आये हुए अतिथि का अपमान भी नहीं करना चाहते थे।

राजेन्द्र के पिता बोले—बाबा जी कल आपने बड़ी ही विचित्र-विचित्र बातें बताईं। मैं तो रात भर आपकी कही हुई बातों को ही सोचता रहा। आज जब राजेन्द्र स्कूल से पढ़कर आया और यहां आने लगा तो मैं भी यहाँ आने का लोभ न छोड़ सका।

बाबा मुस्करा पड़े और बोले—आप सब आए हैं तो फिर आपका स्वागत है। मैं तो अपनी यात्रा का करीब-करीब पूरा हाल इन बच्चों को बतला चुका हूँ। थोड़े ही दिन में मेरी यात्रा सम्बन्धी पुस्तक छप कर तैयार हो जायेगी। आप सबको मैं भेंट में एक-एक किताब दूंगा।

प्रमोद अपने पिता के डर से चुप था लेकिन जब उससे नहीं रहा गया तो बोला—बाबा अभी तो आपने पूरा हाल भी समाप्त नहीं किया। अफ्रीका के कुछ बड़े-बड़े शहरों और अपने जादू के खेल के बारे में भी कुछ बताइये।

प्रमोद के इस प्रस्ताव से सब खुश हुए पर राकेश ने कहा—बाबा, आज तो आप कुछ जादू का खेल हम सबको दिखा दीजियेगा। राकेश के प्रस्ताव को बाबा ने भी पसंद किया। उन्होंने भी इतनी बड़ी भीड़ में मुंह से बोलने की अपेक्षा खेल दिखाना ही पसन्द किया। अतएव बाबा ने कहा—आप लोगों को मैं कुछ जादू के खेल दिखाता हूँ। इन खेलों के सहारे ही मैं अपनी अफ्रीकी यात्रा का खर्चा निकाल सका।

सभी लोग ध्यान से बाबा का मनोरंजक खेल देखने लगे। करीब एक घंटा तक उन्होंने उन लोगों को तरह तरह के खेल दिखाये। खेल बड़े विचित्र थे और सब लोगों ने उन्हें पसंद किया।

खेल के बाद बाबा बोले—मैं अफ्रीका के नौरोबी शहर को देखने के बाद भारत वापस आगया। नौरोबी पूर्वी अफ्रीका का सबसे सुन्दर और बड़ा शहर है। उसे

छोटा लंदन समझना चाहिये। यहां अजायबघर बड़ा ही सुन्दर और देखने योग्य है। अफ्रीका के सभी जीव जन्तुओं की फोटो तथा उनके खाल में भूसा भरकर उन्हें बिल्कुल सचमुच का बनाकर सजाया गया है।

मेरी अफ्रीका यात्रा करीब तीन मास की रही। मैंने यह यात्रा कर बड़ा ही अच्छा अनुभव किया। अपने देशवासी से मै यही कहूंगा कि वह घर में जमे रहने की आदत को छोड़ देश विदेश घूमें और अनुभव प्राप्त करें।

सभी लोगों ने बाबा को धन्यदाद दिया और उनके विचारों की प्रशंसा की—काफी रात गए सब घर लौट आये।

हमारे तीनों साथी दूसरे दिन बाबा को देखने फिर उनकी कुटिया गए, परन्तु कुटिया सूनी थी। कुटिया के बाहर एक छोटे से कागज का टुकड़ा पड़ा था, जिसमें बाबा ने लिखा था—

मेरे प्यारे बच्चो, मैं थोड़े दिन तक तुम लोगों के साथ रहा। इससे मैंने बड़े ही सुख से अपना समय व्यतीत किया। मुझे एकाएक ही जाना पड़ रहा है, शायद मैं एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर जापान जाऊंगा।

मेरा पासपोर्ट कलकत्ते में बनकर तैयार है और मैं आज ही कलकत्ता जा रहा हूं। तुम तीनों ही बच्चे

बड़े साहसी और दिलेर हो। मुझे विश्वास है कि बड़े होकर तुम तीनों ही नाम कमाओगे।

जाते वक्त मैं तुम लोगों से न मिल सका इसका मुझे दुःख है।

तीनों बच्चे इस कागज के टुकड़े को पढ़कर काफी देर तक चुपचाप कुटिया के बाहर बैठे रहे। उनके सामने जोगिया बाबा का चित्र और उनकी प्यार भरी बातें बार बार नाच रही थीं।

बड़ी रात गए वह घर लौटे और रात भर जोगिया बाबा की तस्वीर और अफ्रीका का चित्र सपने में उनकी आँखों के आगे नाचता रहा।